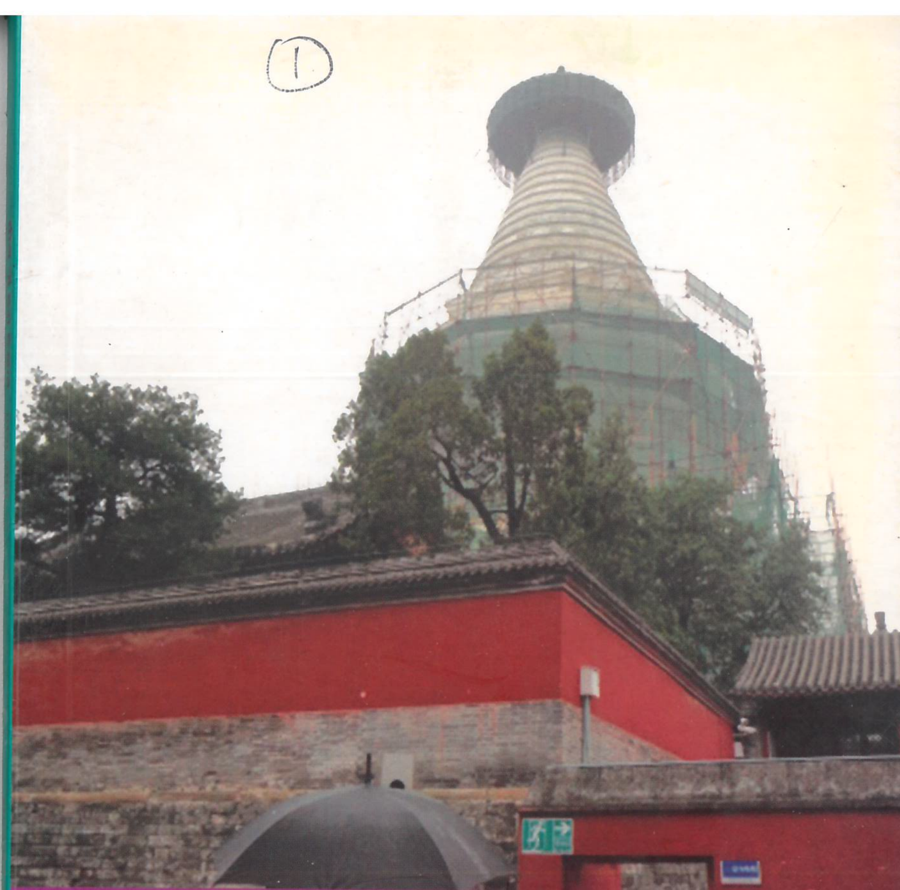
(1)



रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'

चीन जे हम देखल

यात्रा प्रसंग

चीन
जे हम देखल

रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'

चीन
जे हम देखल
(यात्रा प्रसंग)

रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'

प्रकाशक



जनकपुर ललित कला प्रतिष्ठान

चीन
जे हम देखल
रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'

© लेखक

आवरण चित्र
बिजिंगमे नेपालक कलाकार अरनिको द्वारा बनाओल पैगोडा

संस्करण
प्रथम : ५०१, २०७०।२०१४

लेआउट/कभर
राजुप्रसाद काफ्ले

प्रकाशक
जनकपुर ललितकला प्रतिष्ठान

मुद्रक
हिसी प्रेस, जमल, काठमाडौं

मोल
सामान्य : रु. १००।-
कड़ा गत्ता : रु. २००।-

ISBN : 978-9937-2-7479-1

CHINA JE HAM DEKHAL
RAM BHAROS KAPARI 'BHRAMAR'

चीनक प्राचीरकेँ टपैत
मैथिलीक यात्रा साहित्य

मैथिलीमे यात्रा-साहित्यक श्रीगणेश 1910 ई. मे भेल । चेतनाथ झा लिखित 'श्रीजगन्नाथपुरी यात्रा' मैथिलीक पहिल यात्रा साहित्य (पोथी) थिक । ओ 1910 ई. मे दरभङ्गासँ पुरी गेल छलाह आ' मासाभ्यन्तरहि पोथी छपि गेल छल (सन्दर्भ : 'मैथिलीक आरम्भिक यात्रा साहित्य, सम्पादक- डा. रमानन्द झा 'रमण', 2009) । निश्चिते लोक पहिनेसँ यात्रा करैत रहल होएत, किन्तु मैथिलीमे उपलब्ध नहि अछि । जखन मैथिलीमे पत्र-पत्रिकाक प्रकाशन आरम्भ भेलैक, यात्रावर्णनक लेखन एवं प्रकाशन होअए लागल ।

पहिने यात्राक उद्देश्य देश-दर्शन वा तीर्थाटन आ' वाणिज्य-व्यवसाय छल । बौद्धकालमे धर्मप्रचार जोड़ा गेल । सम्राट अशोकक राज्यकालमे बौद्धधर्मक प्रचार-प्रचारक हेतु बेसी यात्रा करौल गेल छल । भारतक सुदूर देशसभमे बौद्धधर्मक एहि व्यापक रूपेँ प्रचार बिना यात्राक सम्भव नहि भेल होएत । कालान्तरमे समुद्र यात्रा वर्जित भए गेलैक । तकर कारण छल जे व्यवसायी लोकनि अपना सङ्गे धन-सम्पतिए टा नहि अनैत छलाह, देश-देशक धर्म, संस्कृति एवं आहार-व्यवहार सेहो आनए लागल छलाह । एहिसँ भारतक भाषा-संस्कृति एवं आहर-व्यवहारपर प्रतिकूल प्रभाव पड़ए लागल छल । समाजकेँ धर्मपर किंचितो आघात स्वीकार नहि छलैक (Dr. Dinesh Chandra Sen, *The Folk Literature of Bengal*, 1920, P.No.62 - "And, if they returned to India, they came with

strange outlandish manners imitating the ways of foreigners, and fell upon thier quiet homes like thunder-bolts destroying the Hindu ideas of domestic life. The Brahminical leaders, in the absence of any political power to control the situation, prohibited sea-voyages and enacted social laws for outcasting those who would be guilty of infringing them.") फल भेलैक जे समुद्रयात्रा मिथिलामे वर्जित कए देल गेल । ई बन्हेज 1930 ई. धरि छल ।

प्रशासनिक एकाइक दृष्टिसँ यात्रा दू प्रकार अछि - स्वदेश यात्रा एवं विदेश यात्रा । स्वदेश यात्रा भेल अपन देशमे कएल गेल यात्रा तथा विदेशक कएल गेल यात्रा, विदेश यात्रा भेल । ओहिना यात्राक साधनक दृष्टिसँ यात्रा तीन प्रकारक अछि - जलयात्रा, आकाशयात्रा एवं स्थलयात्रा । कतेको एहन यात्रा होइत अछि, जाहिमे यात्री यात्राक सभ साधनक उपयोग करैत छथि ।

यात्रा साहित्यक निर्माण वास्तविक अनुभवक आधारपर होइत अछि । अर्थात्आवश्यक जे यात्रा साहित्यक लेखक स्वयं यात्रा कएने होथि । यात्रा वर्णनक लेखन यात्राक समाप्तिपर होइत अछि । तेँ एकर मूलमे संस्मरणत्मकता अवश्य रहैत छैक । ई तत्व एकर विशेषता थिकैक । यात्राक विशेषता यात्राक प्रयोजनपर सेहो निर्भर करैत छैक । शिल्पक आधारपर यात्राक तीन कोटि अछि - विवरणात्मक, संस्मरणात्मक एवं कथात्मक ।

विवरणात्मक यात्रा साहित्यमे यात्राक विवरण विस्तारपूर्वक रहैत अछि । देखल स्थानक इतिहास, भूगोल, पौराणिक माहात्म्य, प्राकृतिक सुषमाक चित्रण, ओहि बीचमे जीबैत लोकक उठब-बैसब, बात-विचार आदिक वर्णन विस्तारसँ रहैत अछि । एहि कोटिक यात्रा साहित्य विषेष सूचनात्मक होइत अछि । एहिसँ पाठकक ज्ञानक वृद्धि होइत छैक ।

संस्मरणात्मक यात्रा साहित्यमे लेखकक आत्मनिक्षेपक प्रधानता रहैत अछि । ओ भोक्ता नहि, वाचक सन प्रतीत होइत छथि । 'हम एना कएलहुँ, हमर परिवारकेँ एना भेलैक' - एहि प्रकारक वर्णन अरूचिकर भए जाइत अछि ।

कथात्मक यात्रा साहित्य रोचक होइत अछि । भावात्मक स्तरपर पाठक केँ ओ जोड़ैत जाइत छैक । यात्राक क्रममे प्राप्त अनुभव आ' भौगोलिक वा ऐतिहासिक यथार्थकेँ एहि प्रकारेँ प्रस्तुत कएल जाइछ, जाहिसँ मानवीय सत्यक साक्षात्कार पाठक करैत रहथि । एहि सभ वर्गीकरणक अछैतो लेखकक व्यक्तित्व आ' रूचिक स्पष्ट छाप यात्रा साहित्यमे रहैत अछि । यात्राक उद्देश्य भिन्न-भिन्न होइछ, तेँ उद्देश्यक प्रभावसँ यात्रा साहित्य मुक्त नहि भए सकैत अछि ।

आवागमनक साधन एवं सुविधामे विस्तारसँ यात्रीक संख्यामे पर्याप्त वृद्धि भेल अछि । मुदा, ओहि अनुपातमे यात्रा साहित्यक भंडार नहि भरि रहल अछि । तकर कारण छैक यात्रीमे भाषा-चेतना एवं सर्जनात्मकताक अभाव । जखन सर्जनात्मक प्रतिभा-सम्पन्न साहित्यानुरागी व्यक्ति यात्रा करैत छथि आ' अपन अनुभवकेँ लिपिबद्ध कए लैत छथि तखनहि यात्रा-साहित्य अस्तित्वमे अबैत अछि । सम्पूर्ण मैथिली यात्रा साहित्यक लेखा-जोखा कएलापर स्पष्ट अछि जे मैथिलीक यात्रा साहित्यक भंडार पुष्ट नहि अछि । आ' जँ नेपालमे लिखित मैथिली यात्रा साहित्यपर दृष्टिपात करी

तँ ओ आओरो क्षीणकाय अछि, से दूनू कोटिक यात्रा साहित्य। डा. रेवतीरमण लाल लिखित 'हमर विदेश भ्रमण' (1988 ई.) यात्रा साहित्यक पहिल पोथी थिक। मैथिलीक सम्पूर्ण विदेश यात्रा-साहित्य आंगुरपर गनल अछि। ओहिमे अछि 'प्रवास जीवन' (डा. सुभद्र, 1950 ई.), 'सात समुद्र पार' (डा. जगदीशचन्द्र झा, 1969 ई.), 'विदेश भ्रमण' (उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास', 1978 ई.), 'श्यामली' (नगेन्द्र कुमार, 1980 ई.), 'यात्रा प्रकरण शतक' (डा. सुभद्र झा), 'पृथ्वी 'परिक्रमा' (डा. चेतकर झा, 1992 ई.), 'विश्वदर्शन' (मुरारी मधुसूदन ठाकुर, 2005 ई.), 'परदेश' (भाग्यनारायण झा, 2007 ई.), 'हमर इंगलैंड यात्रा' (महेन्द्रनाथ झा, 2007 ई.) तथा 'आँखिमे बसल' (अशोक, 2013)। जेना, चेतनाथ झा लिखित 'श्रीजगन्नाथपुरी यात्रा' मैथिलीक यात्रा साहित्यक पहिल पोथी थिक, ओहिना कुमार गङ्गानन्द सिंह लिखित 'श्रीमान् महाराजाधिराजक सङ्ग' मैथिलीक पहिल विदेश यात्रा साहित्यक कोटिमे अबैत अछि। कुमार गङ्गानन्द सिंह, 18 अक्टूबर 1930 कँ महाराजाधिराज कामेश्वर सिंहक सङ्ग जल जहाजसँ बिलैंतक यात्रा प्रारम्भ कएने छलाह। ई यात्रा वर्णन 'मिथिला मिहिर' (1931 ई.) मे छपल अछि। किन्तु अद्यावधि असंकलित अछि।

मैथिलीमे चीन यात्राक साहित्य नहि अछि। अनेक चीनी यात्री भारत आएल छथि। ओहि यात्री सभमे ह्वेनसांग, फाहियानक नाम विशेष उल्लेखनीय अछि। हिनकालोकनिक यात्रा वर्णन तत्कालीन भारतक इतिहासक एक प्रामाणिक स्रोतक रूपमे मान्य अछि। ओहिना कर्णाटवंशी राजा रामसिंहक समयमे सेहो एक चीनी यात्रीक आगमनक उल्लेख अछि। भारतक कोनो यात्री चीन गेल छलाह, तकर उल्लेख नहि अछि, किन्तु बिना यात्रा कएने बौद्धधर्मक एतेक व्यापक प्रचार भेल होएत, से असम्भव। मिथिलामे जेना बौद्धधर्मक विरोध होअए लागल छल, एहिसँ एहि बातक कमे सम्भावना छैक जे कोनो सनातनी मैथिल बौद्ध चीनक यात्रा कएने होएताह।

उपलब्ध सूचनाक अनुसार डा. अमरनाथ झा यूनेस्कोकक तत्वावधानमे 1950 मे चीन गेल भारतीय प्रतिनिधि मण्डलक नेतृत्व कएने छलाह। एकर अतिरिक्त एहि प्रसङ्ग आर कोनो अभिलेख सुलभ नहि अछि। चीनक यात्रासँ सम्बन्धित यात्राक वर्णनक लेल वर्तमान शताब्दीक गत पाँच वर्ष बेस उर्वर अछि। एहि अवधिमे मैथिलीक दू कृती रचनाकार चीनक यात्रा कए अपन यात्रावर्णन लिखल अछि। पहिल छथि प्रो. उदयनारायण सिंह 'नचिकेता'। ई पहिल बेर 2009 मे साहित्य अकादेमीक प्रतिनिधि मण्डलक एक सदस्यक रूपमे चीनक यात्रा कएने छलाह तथा दोसर बेर सितम्बर 2013 मे व्याख्यान देबाक हेतु चीनमे आमन्त्रित छलाह। हिनक चीन यात्राक वर्णन 'हमर चीनकँ चिन्हब' (मिथिला दर्शन, नवम्बर-दिसम्बर, 2013) अछि। दोसर अछि रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क सितम्बर, 2013 मे प्रज्ञा प्रतिष्ठानक एक प्रतिनिधिक रूपमे चीनक यात्रा। ई तीनू यात्रा सांस्कृतिक यात्रा थिक।

शिल्पक दृष्टिसँ यात्रा साहित्यक हम तीन खल कएल अछि। एहि दृष्टिसँ विचार कएलापर रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क चीनक यात्राक वर्णन विवरणात्मक कोटिमे अछि। एहिमे चीनक ऐतिहासिक स्थल सबहक वर्णन विस्तारसँ अछि। चीन यात्राक

सौभाग्यसँ वंचित एवं चीनक सांस्कृतिक सम्पदाक जिज्ञासुक लेल ई परम उपयोगी वर्णन अछि । एहिमे लेखकक पुरातात्विक दृष्टि अछि, किन्तु चीनक भाषा-साहित्यक सुगन्धि नहि भेटैत अछि । सम्भव थिक जे एहि प्रायोजित यात्रामे साहित्यक स्थान नहि रहल हो । प्रो. नचिकेताक यात्रा वर्णनमे चीनक भाषा- साहित्यक सौन्दर्य महमह करैत अछि । प्रो. नचिकेता लिखने छथि जे 1984 ई.क पूर्व चीनमे यातायात सुबिधगर नहि छल । किन्तु सम्प्रति से स्थिति नहि अछि । कापड़िक वर्णनसँ सेहो ई बात पुष्टि होइत अछि । गत दू दशकमे चीनमे भेल विकासक ई द्योतक थिक । चीनक क्रान्ति राजतन्त्र आ' राजा द्वारा कएल जाइत शोषणक विरोधमे भेल छल । बादमे सांस्कृतिक क्रान्ति सेहो भेलैक । मुदा ओहि राजा सबहक प्रसाद आदिकेँ ओलोकनि नष्ट नहि कएनि । ओहि सबहक संरक्षण करैत पर्यटन स्थलक रूपमे विकास भेल अछि । सम्प्रति ओ स्थल सब विदेशी मुद्रा अर्जनक स्रोत सिद्ध भए रहल अछि । ई एहि बातक प्रमाण थिक जे एक महाशक्तिक रूपमे चीनक उदयक पृष्ठभूमिमे ओकर संस्कृति छैक । आ' ओहि संस्कृतिक संरक्षणक प्रति ओ पूर्ण साकांक्ष अछि । अपन इतिहास एवं संस्कृतिक प्रति चीनी जनताक ई दृष्टि अनुकरणीय अछि ।

हमरा विश्वास अछि, रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क चीन यात्राक वर्णन चीनक प्रसङ्ग पाठकक अनेक भ्रमकेँ तोड़त आ चीनयात्रा सम्बन्धी मैथिलीक पहिल पोथीक रूपमे मैथिली यात्रा साहित्यमे एक अभावक पूर्ति करत ।

02 जनबरी, 2014 — **डा. रमानन्द झा 'रमण'**



एहि यात्रा संस्मरणक प्रसंग

चीन जे हम देखल -'हमर चीन यात्राक ई संस्मरण पुस्तकाकार निकाली वा नहि गुनधुन रहए । एक त सात दिनक घुमनाई आ ताहिपर कार्यक्रमपर बेसी जोड़ हएबाक कारणें अन्य अनुभूतिक मात्रा थोड़े रहैक । खुल्ला घुमलाक अपन फूट आनन्द होइत छैक । आ जखन संगमे 'लगबार' रहए तं कहबाक जरूरति नहि मनोवांछित अनुभूतिक अकाल पड़िए जाइछ । तथापि निर्धारित वैचारिक कार्यक्रमक अतिरिक्त किछु ऐतिहासिक स्थल सभक भ्रमण कार्यक्रम रहैक आ ओत्त' सएह 'लगवार' काज देने रहए ।

जे से २०६९ साल आसीन ७ गते सं १३ गते धरिक चीन भ्रमणमे हम जे अनुभव कएलहुँ तकरा संस्मरणात्मक रूपें तीन किस्तमे लिखल । एक 'आंजुर'क पुनर्प्रकाशनक पहिल अंकमे गेल, दोसर 'आंगन-६'क अंकमे आ अन्तिम 'आंजुर-२'क अंकमे जाएत । तीन किस्त आ तकर किताबी रूप । कतेक बात समटल जाए, कतेक बात छोड़ल जाए । एक त ओहिना चीन विश्वक सभसं पैघ जनसंख्याबला देश अछि । अनुमानित डेढ़ अरबसं कम नहि । आ तहिना अनुमानित दशलाख कि.मि.क क्षेत्रफलमे पसरल अछि । नेपालक कोनो उच्च हिमालयक जड़िमे एकटा गोहिआमे बैसकऽ हिमालयक चोटीपरक अगम-अथाह दुरीके बारेमे चिंतन कएल जाए सएह स्थिति चीनक छैक । आ एतेक विशाल राज्यकें सातदिनमे सभ किछु बुझि लेब असंभव बात छलैक आ तएँ बिना अनेरे नमरएने जे किछु एहि सात दिनमे बुझलहुँ, गमलहुँ एहि पुस्तकमे राखि देने छी ।

आब विदेश यात्राक सन्दर्भ। विदेश यात्राक नाम पर सब दिन हम हड़कम्प कपैत रहल छी। स्वास्थ्य, भाषा, अव्यक्त डर, घरमुहां प्रवृतिक चिंतन सब हमरा विदेश यात्रासं रोकबाक काज करैत छल। एक बेर त हम बैंकक टिकट लेल कम्मे पाइमे कोनो दोसर चिन्हारकें दऽ देलियनि। ओ बजाप्ते एक सप्ताहधरि बैंकक घूमिकऽ अपन रसानुभूति सभ सुनबैत रहल आ हम मनमारिकऽ सुनैत रहलहुँ। कहियो उत्कंठा नहि जागल एहन कोनो भ्रमणक लेल।

जाहिया हम नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानमे परिषद् सदस्यक रूपमे अएलहुँ त लागल छल आब हमरा चीन जाही पड़त। दुनू देशक साहित्यिक संस्था सभसं आदान-प्रदानक समझौत रहै पूर्वमे। विचमे परिषद् नहि बनलासं क्रम टुटलै, मुदा आब त हएबै करतै आ हम अएलहुँ त लागल चीन जएबाक अवसरो अएबे करत। आ से अएलैक आ समझौतो भलैक। तखन एम्हरसं प्रतिनिधि मण्डल जएबाक सुरसार होब लागल। हम जनकपुरमे रही जखन नामक छलफल भेल रहए। अन्ततः हमर नाम चीन जाएबला टोलीमे गेल। हमरा खूब प्रशन्न 'हएबाक चाही, मुदा हमर स्वभाववश यात्रासं कन्छी काट' लगलहुँ। होइत रहए नहिए जाए पड़ैत त नीक। स्वास्थ्य सम्बन्धी अत्यन्त सामान्य समस्या रहए मुदा तकरा अनेरे बढ़ौने चढ़ौने रही। चीनमे कोना की! खएनाई-पीनाईक समस्या। आर नहि जानि कतेक कतेक। अपन चिकित्सकसं निरन्तर सम्पर्कमे आश्वस्तिक अपेक्षा।

आ जखन जी-जान जांति कऽ चीन उड़लहुँ त सातदिनक सफल भ्रमणकऽ ढाका होइत घुरलहुँ। सभ चिन्ता, भ्रम अपने कात लागि गेल आ चीनक हरेक मनमोहक वस्तुक मनोरम छविमे एनाकऽ ओझरा गेलहुँ जे सभ बात विसरा गेल। आ तखन विदेश भ्रमणक अर्थ बुझने रहिऐक।

ओना विदेश भ्रमणमे निरन्तर जाइत किछु मित्रकें देखैत छियनि हुनक बोली-बानी, आचरण-व्यवहारमे कोनो तरहक परिवर्तन नहि भेल छन्हि। हं, जखन कोनो प्रसंग आओत त अपन विदेश भ्रमणक संस्मरणटा सुना कऽ सन्तोष करैत देखैत छीयन्हि। तखन विदेश भ्रमण किए ? औजी करबलाके लेल लाख धन्धा। मौज-मस्ती, कैफे-क्लब, दर्शनीय स्थल सभक अनुभव आ जं सरकारी खर्चमे छी त अतिरिक्त आयक स्रोत सेहो। एक पंथ कएक गोट काज। रही त हमहुँ सभ सरकारीए खर्चबला मुदा नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानक खर्चबला। मुट्ठी बान्हि कऽ एत्त खर्च कएल जाइत छैक। तखन सातदिन घुमबा लेल प्रशस्त छलैक आ से हम सभ तकर आनन्द लेलहुँ।

मैथिलीमे यात्रा साहित्य पूर्वेसं लिखल गेल छैक। मुदा ततेक नहि, जतेक हएबाक चाही। नेपालीय सन्दर्भमे डा. रेवती रमण लाल आ एम्हर आबि डा. रामदयाल राकेश (मैथिलीमे अनुवादो सही लिखबाक कारणें)क पुस्तकटा छैक। दुनू गोटे खूब घुमल छथि। तकराबादो बहुत गोटे घूमल छथि, हएताह। मुदा से छपल रूपमे नहि आबि सकल छैक। तखन भेल जे एकटा छोट्कीयो सही-संस्मरण आबिए जाए आ ई **'चीन जे हम देखल'** अहां सभक हाथमे अछि।

किछु मित्र लोकनिकें शिकायत रहैत छन्हि साहित्योतिहास लिखनिहार सभसं जे हमर नाम ओ अधिकांश विधामे बड़ विस्तृत रूपें किएक लैत छथि। एहि शिकायतक उत्तर नेतं उएह लोकनि

दऽ सकैत छथिन्ह, ने केओ आन मुदा हमर रचना मैथिली साहित्यक प्रायः सभ विधामे छैक आ तखन जं रचना आ रचनाकार सभक चर्च होब' लागए तं की तकर चर्च नहि होइक ! ताहूमे ई पुस्तक फेर किनको कचोट दऽ सकैत छन्हि । आब यात्रा संस्मरणक विधामे सेहो चर्चा करैत देखथिन्ह । ई विधा छुटल छल ।

हमर लेखन सायास नहि होइत अछि । सहज-स्वभाविक लेखनक क्रममे कोनो दस्तावेजकें पुस्तकक रूपमे परिवर्तित करबाक हमर लगनशीलता किताबक संख्या बढ़ौने जा रहल अछि । आ ई समस्या कोनो बहरिया मित्र सभक हेतु मात्र नहि छैक, हमर घरैया समस्या सेहो अछि । पाइक खर्च आ घरमे पुस्तकक ढ़ेरी । धरबाक-ओसारबाक दिक्कत । तकर बेसी मार हमर निर्दोष पत्निकें पडैत छन्हि जनिका बरोबरि हमर भारीक बोझ उठब' पड़ैत रहैत छन्हि ।

हमर एहि छोटछीन संस्मरणात्मक पुस्तकके पढि अपन विचारसं हमरा अनुगृहित कएनिहार डा.रमानन्द झा रमणक प्रति आभार व्यक्त कर चाहैत छिऐन ।

चलु, हमर ई चीनक संस्मरण पढ़बाक पलखति निकाली आ एकटा अनुभूतिकें बांटि हमरा उत्साहित करी सएह आशाक संग ।

विवाह पञ्चमी
२०७०

रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'

प्रसंग : एक

बिजिंग



ग्रेटवालपर पहूँचब सपना त रहए औ !

पढ़ लिख लागल रही त चीनक बारेमे बहुत किछु बूझ लागल रहिऐक आ उत्सुकता सेहो बढ़ लागल रहए । कहियो माओक नामक कारणें, कहियो चाउ-एन-लाइक चर्चाक कारणें त कहियो भृकुटी आ स्रोनचन गम्पोक कारणें । किछु आर छेटगर भेलहुँ तँ ह्वेनसांग हमरा लेल जिज्ञासाक नव नाम भऽ कऽ अभरल । उठ-बैस बढ़ल त चीनक 'ग्रेटवाल'क तिलिस्म मोन पर प्रभाव छोड़ लागल । अन्तरिक्षसँ सौसे संसारमे उएह कहांदन नीक जकाँ देखाइत छैक । चीनकप्रति जानकारीक मोटामोटी विषय इएह छल ।

जखन नेपाल प्रज्ञाप्रतिष्ठानमे नियुक्ति भेल त पहिल बेर देह एहि दुआरे सिहरल जे हमरा विदेशयात्राक अवसर भेटि सरैत अछि आ से हमरा लेल किन्नहु उपयुक्त नहि हएत । एहि मानेमे हम बरोबरि कमजोर रहलहुँ जे विदेश यात्रामे भाषाक समस्या आ हवाइयात्रामे भयक चिंताक कारणें । विदेश यात्राक नामपर प्रशन्नतासँ खिलैत लोकक अनुहार देखैत छलहुँ त हमरा स्वयंक प्रति ग्लानि होइत छल -'डरछेरूवा' नहितन ! घरसँ बाहर निकलैत अनेरे दश तरहक गुनधुनी, खाली विपरीत सोच । नीको होइछै से पक्ष जेना हमरा आकर्षित नहि करैत छल ।

से जखन चीन जएबाक अवसर भेटि सकैत अछि एहन 'आशंका' जखने मनमे उबजल चिन्तित होब' लगलहुँ । किछु समय त लगलैक तेसर वर्ष अबैत-अबैत चीनक चाइना फेडरेशन अफ लिटरेरी एण्ड आर्ट सर्किलसँ समझौता सम्पन्न भेलैक, ओ सभ पहिने आएल, स्वागत सत्कार भेलैक । तखन नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानक टीम जएबाक बात रहैक ।

एहि बीच भारतक साहित्य अकादमीसँ सेहो आदान-प्रदानक समझौता सम्पन्न भेलैक । ओतक्को साहित्यकार सभक दल नेपाल घूमि गेल छलाह । तखन प्रज्ञामे दूटा टीम बनबाक बात भेलैक- एक टीम चीनक हेतु, एक टीम भारतक हेतु । बड़ घमर्थनक बाद टीम तय भेलैक । हमरा चीनक टीममे राखल गेल । मतलब भेल हमरा चीन जाए पड़त । नहि, नहि करितो चीन जएबाक प्रशन्नता एक दिश तँ दोसर दिश हमर स्वास्थ्यक समस्या ठाढ़ भऽ गेल । कही त हम अपने ठाढ़ कऽ लेलहुँ । हमरा कहियो काल ठंठीक एलर्जि भऽ जाइत अछि । पिनासक प्रारंभिक लक्षण अबिते माथ भारी भऽ जाइल करैत अछि आ आन तेहन कोनो कष्ट नहि । दवाई खाइ छी त सभ ठीक भऽ जाइछ । सामान्य प्रक्रिया छैक । मुदा आन ठाम, कोनो कठिनाई भेल त ! ताहुमे हमरा सभक टोली नेता उपकुलपति जी चीनसँ अपन-अपन खातिर दवाई दारू लऽ कऽ चलबाक जानकारी आएल हएबाक बात बतबैत छथि । से आर चिन्तित कऽ दैत अछि । पता नहि ओत्त केहन अवस्था छैक । कहांदन टोलीमे जाएबलाक जे उमेर छैक ओ सभक लगभग ६० वर्ष वा एहिसँ

बेसीक रहैक । तएँ ओतुक्का घरबैआ स्वास्थ्य पर बेसी ध्यान केन्द्रित कएने छलाह । ताहुमे जं वीमा भऽ गेल रहितैक तँ कठिनाई नहि छलै, ओ सभ बेसी, खियाल करितथि । मुदा समयाभावके देखैत बीमा संभव नहि भऽ सकलैक तएँ दवाई-दारू लऽ चलबाक अनुरोध आएल रहैक ।

आब हम अपन स्वास्थ्यपर बेसी केन्द्रित भऽ गेलहुँ । २०६९ आसीन ७ गते रवि दिन (२३ सेप्टेम्बर २०१३) काठमाण्डूसँ चीन दिश उड़बाक रहए दिनमे ११ बजे । शनि कऽ त आर चिन्ता बढ़ि गेल । इएनटी डाक्टरकेँ खोजलहुँ, क्लिनिक बन्द छल । फोन करबएलहुँ त ओ जे दवाई पूर्वमे खएने छलहुँ, सएह खएबा लेल कहलक । भेल जे सुगर लेबल सेहो जँचाइए लेल जाए । ओकरो क्लिनिक बन्द । तखन हारि कऽ कान्तिपुर अस्पताल गेलहुँ । ओत्तहु चिकित्सक नहि । तखने हमरे गामक एकटा बचिया प्याथोलोजी ल्याबमे रहए, ओकरेसँ रैण्डम टेस्ट कराओल । सुगर नर्मल छल । आब त नहि जएबाक कोनो बहन्ना नहि सुतरलैक । बड़ तकलीफसँ जएबाक हेतु मोनकेँ तैयार कएल । पत्नि, जनकपुरसँ जेठका बालक जएबाक हेतु उत्साही बनबैत रहल । आ अन्ततः रबि दिन त्रिभुवन अन्तर्राष्ट्रिय एयरपोर्ट पर दश बजे दिश पहुँचिए गेलों । साँच बात त ई रहैक नओ गोटेक दलमे सभ एक दोसरसँ मिलल, नीक समूह बनल छल । गपे सपमे सभटा कटि सकैत छल, मुदा मनके दहशति के उतारैत ।

सभ गोटे जम्मा भेलहुँ । मोनपर भारीपन किछु हल्लुक भेल । हम सभ व्यवहारिकता पुरा करैत प्रतिक्षाकक्षमे गेलहुँ ।

कानमे मोबाइल लगले रहए । कखनो डेरा पर, कखनो जनकपुर त कखनो चिकित्सक डा. जयसवालकें । अन्तमे जखन हवाई जहाजमे चढ़बाक बेर अएलैक तँ डा. साहेबक अपन अवस्था बतबैत किछु जिज्ञाशा कएलियनि- ओ पूर्ण विश्वासक सँग यात्रा करबाक मन बढ़ौलनि आ हम सहयात्री मित्र सभक सँग चाइना इस्टर्न एयरलाइन्सक एम यु ७५८ नं.क जहाजक भितर प्रवेश करैत छी । जे हएतै, देखल जएतै ।

जहाज ठीक समय ११.२५ पर खुजैत अछि । जहाजमे हवा फेक बला बटमकें अपना दिश घुमालैत छी । शीतल हवा मनके शीलता प्रदान करैत अछि । बोइंग ७३७क ई जहाजकेँ कुनमिंग पहुँचबामे २ घंटा ४५ मिनट लगतैक । खिड़की कात सं ३३ नम्बरक सीट रहए हमर । सभ साथी अगले बगलमे रहथि । हमसभ चीनक समय अनुसार ४.४० बजे कुनमिंगमे पहुँचि गेलहुँ । ओह, भव्य एयरपोर्ट । ओहुना विदेशक अनुभव त नहि छल, तएँ ओ हमरा लेल अद्‌भूते लागल । रहबो करैक वास्तवमे भव्य । निचां, उपर अलग-अलग क्षेत्रक व्यवस्था । आन्तरिक, बाह्य उडानक हेतु । आब हम सभ आन्तरिक टर्मिनल दिश प्रस्थान करैत छी । हमरा सभकें साँझ ७.२० बजे वेजिंगके लेल हवाई जहाज पकड़बाक रहए । काफी समय रहैक, एम्हर ओम्हर घुमैत, बातचीत करैत, विस्कुट-पानि खाइत पिबैत वितौलहुँ ।

हँ, चीन जएबासँ पूर्व खाय पीबाक सेहो कम चिन्ता नहि भेल रहए । कहाँदन ओत्त साँप, गाइक मासु आम बात छैक ।

पीलुआ सभ खाइत छैक । तखन कहल गेल जे रोटीयों जकाँ किछु भेटैत छैक, खाइल जा सकैछ । हम सभ टोली नेताकें कहि देने रहियनि जे सभके खोराककें ध्यानमे राखि ओतुक्का गाइडकें समझा देबाक लेल । जखन खाना आओत त सभक इच्छा आ बाध्यताकें ध्यानमे राखल जाएत । से बात बहुत ठाम भेलैक त कतेक ठाम धोखासँ ओहनो खाद्य सामग्री आबि गेल जे हम त किन्नहुँ नहि छुवितहुँ । जेना बहुत विशिष्ट परिकार कहल गेल वेंगक तीमन, पातपर चलबला कीराक सूप ..... । हँ, उसनल तरकारी, एक कटोरी भात आ रोटीक नामपर पतरका तेहने सन किछु हमरा सभ सन खौकारक हेतु प्राण रक्षक रहए । सूप खाएसँ पूर्व पीबाक लेल देल जाइक मुदा ओ कथीक रहए से विचारिए कऽ पीब' पड़ैक । जड़ी बूटीक चाह त अवस्से रहए, से वड़ नीक । उसनल माछकें कांटासँ खएबाक अपन आनन्द रहैक, मुदा स्वाद नहि । मूर्गि अबैक, खंसीक माँस सेहो अबै । जनिका जे मन मानैक से खाथि । सांच बात ई छैक - चीनक सातो दिनक भ्रमणमे खानाके लऽ कऽ हमर प्राण अवग्रहमे रहए । हँ, स्वास्थ्य सम्बन्धी सभ चिन्ता हेरा गेल छल, हम सभ मित्रक सँग खूब आनन्दसँ भ्रमणमे छलहुँ । जहाँ धरि खानाक बात छैक, जखन जनकपुर आबि डाक्टरक क्लीनिकमे वजन तौललहुँ त हम अचंभित भऽ गेलहुँ - हमर तौलमे दू किलोक बढ़ोत्तरी भऽ गेल छल । हमरा लागल चीनक खानामे देल गेल उसनल तरकारी सभक परिकार सभक ई कमाल त ने भेल !

ई प्रसंग फूटसँ एहि दुआरे जे खाना-खोराक चीन भ्रमणक महत्वूर्ण पक्ष भऽ जाइत छैक हमरा सभ सन लिकर विहिन प्राणीक हेतु । आब आगांक कोनो भोजन प्रसंगमे एकर चर्च आवश्यक नहि हएत ।

चीनमे जहाज समयपर उड़ैत छैक । काठमाण्डू एयरपोर्टपर जनकपुर जएबा लेल तीन-तीन घंटाक प्रतीक्षासँ पीड़ाएल मनकें ठीक समयपर जहाजकें उड़बाक व्यवस्था गद-गद कऽ देने अछि । हम सभ चाइना इस्टर्नक फ्लाइट नं. एम यु ५७१८ सं वेजिंगक हेतु ७.२० बजे प्रस्थान कएल जे हमरा सभकें राति १०.४० बजे पहुँचा देलक । तीन घंटा बीस मिनटक बाट । मौसम खराब रहैक । वेजिंगक लग अएलापर पहाड़ पड़ैत छैक- जहाजमे घोषणा भेल, जहाज हिलतैक तएँ केओ गोटे सीटसँ नहि उठथि । हमर सचिवजीकें जोर लागि गेलन्हि, धर फराइत उठलाह आ कोहुना भऽ अएलाह ।

चीनक विशाल एयरपोर्टपर पहुँचलहुँ, औपचारिकतापुरा कएल आ जखन बाहर अएलहुँ त ११.३० भऽ गेल रहैक । बाहरमे आतिथ्य संस्थाक गाइड हाथमे नेपाल एकेडमीक तख्ती लेने ठाढ़ रहए । परिचय भेलैक । आ हम सभ नम्हर गाडी यात्राक बाद होटल मंगोलिया ग्रेण्ड होटल, बेजिंग पहुँचलहुँ कोठरीमे । खान-पीन भेल, रातिके १२.३० बजे पहुँचलहुँ । दवाई खाइत एक बाजि गेल रहए । सुतलहुँ, पहिल राति, अनजान ठाम मुदा भव्य कोठरी । सभके फूट-फूट कोठा देल गेल रहैक । फाइभ स्टार होटलक एकाकी कोठरी.... । कखन आँखि लागल, पता नहि ।

८ गते भोरमे ७.४५ बजे जलखई कक्षमे पहुँचि जएबाक निर्देश रहैक टोली नेताकें । तएँ अपन सभ तरहक नित्यक्रिया (एहिमे संक्षिप्त व्यायाम सेहो पड़ैछ) सम्पन्न कऽ कक्षमे पहुँचैत छी ! कोठरीक चाभी आ नम्बर देखब' पड़ैत छलैक । तखन भितर प्रवेश कएल । पहिनेसँ जाहि बातक चिन्ता छल जे जलखईमे खाएब कथी, तकर चिन्ता ओत्त जाइते दुर भऽ गेल । विशाल हौलक एक पतियानमे रंग विरंगक मिठाइ रहैक । मुदा ओ हमर काजक नहि रहए । तखन दोसर दिश नमकीनक विभिन्न परिकार देखल । फलफूलक एक सँ एक किसिम । खूब मोनसँ जलखई कएलहुँ । खुशी त तखन आर भेटल जखन दूधके देखल । बढ़का जारमे शुद्ध दूध । पैघ गिलासमे जारक टोंटीके घुमा दूध भरलहुँ आ टेबुलपर जा आनन्दसँ पीलहुँ । फलफूल खाएल । माने हमरा चिन्ता करबाक कोनो कारण नहि छल । बादोमे भोरक जलखई चीनक तीनू शहरमे एहिना भेटैत रहल आ दूधकें आनन्द उठबैत रहलहुँ ।

आब चललहुँ सुंग राजाक दरबार देखबा लेल । दरबारके प्रांगणमे जाइते चकविदोर लागि गेल । विशाल क्षेत्र, भव्य महल । उपर लाल छाना आ निचां पीअर देवाल । लाल एक छत्र शासनक, साम्राज्यक आ पीअर राजशाहीक प्रतीक । कएकटा चौक, आंगन, भवनके पार करैत अन्तिम प्रवेश द्वारक भवन लग पर्यटक रूकैत अछि । ओम्हर सैनिकके नियंत्रणमे छैक मूल दरबार । ई सभ त सजल कक्षमे सम्राट अवैत छलाह । अपन कपड़ा बदलैत छलाह । फेर दोसरमे जा चाह-

पान आ मंत्री सभ सँगे सल्लाह, मशबिरा करैत छलाह । फेर तेसरमे जा जनताक बात सुनैत छलाह ।

कहल जाइछ सुंग साम्राज्य कला, संस्कृति आ दर्शनक हेतु चीनमे सदैव स्मरणीय रहत । तांग साम्राज्यक वाद नवम शताब्दीमे सुंग साम्राज्यक उदय भेलैक । विश्वक इतिहासमे ई पहिल शासन छल जे कागजक रूपैआ बहार कएलक । गणतन्त्र चीनमे अपन पूर्वक सम्राटक प्रति आस्था आश्चर्यजनक रूपें वर्तमान देखल । १ जनवरी १९१२ कऽ चीन गणतन्त्रमे गेल । मुदा एखनो साम्राज्यकालीन संस्कृति, धरोहरकें सुरक्षित राखि उच्च सम्मान मात्र नहि दऽ रहल अछि, ओहिसँ सालाना करोड़ो डालरक आय पर्यटकसभसँ प्राप्त कऽ रहल अछि । ई सभ अछि चीनक समृद्ध आर्थिक स्थितिक गुरकिल्ली । स्थिति त ई अछि - सुंग सम्राट अपन विवाहित कनियांक संग सोहागराति मनाबक हेतु तीन दिनधरि एकटा विशेष कक्षमे रहैत छलाह, ओ कक्ष एखन सर्वसाधारणकें बाहरसँ सीसाक ओतसँ देख देल जाइत छैक ! छै नै कमाल !!

चलु एकटा काज त भेल, मुदा डलर भजएबाक चिन्ता रहए । काठमाण्डूमे कहल गेल छल जे चीनमे डलर भजएबामे कठिनाइ होइछै । ओ सभ युयानमे मात्र भुक्तानी लैत अछि । हँ, होटलमे भजा सकैए, मुदा ओकर अपन शर्त होइछ । किछु मित्र होटलोमे थोड़ बहुत भजौलनि । हमरा काठमाण्डूमे एकटा व्यापारी मित्रक सहयोगसँ युयान भेटि गेल छल, तैयो किछु डालर लऽ लेने रही । तय भेल जे दरवार दर्शनसँ घुरैत काल

भोजनसँ पूर्व पाइए भजा लेल जाए । गाइड मि.च्याउ हमरा सभकें चीनक राष्ट्रिय बैंक "बैंक अफ चाइना" मे लऽ गेलाह । काउण्टर पर किछु गप कएलनि आ हमरा सभकें क्रमशः काउण्टरपर जा फार्म भरबाक संकेत कएलनि । सभसं पहिने हमरे अवसर भेटल । हम 'एक्सचेंज मेमो' भरलहुँ आ काउण्टरपर बैसलि महिलाकें देलियनि । ओ अफ्का डलरकें भाव युयानमे जे छलैक तकरा लीखिकऽ हमरा आगां कऽ देलक । हम स्वीकृति देलिऐक तं ओ तत्काल हिसाब जोड़ि हमरा युयान रूपिया, किछु खुदरा पाई समेत देलक । जेना कहल गेल छल, तेहन कोनो कठिनाइ नहि भेल, मोनमे पछतबो भेल जे एक पासपोर्टपर जे जतेक डलरक सुविधा छलैक, सभ लऽ कऽ अएबाक छल, पता नहि की पसीन भऽ जाए । भजौनाइके डरे ताहि झंझटसं मुक्त हएबाक हेतु पाई छोड़ पड़ल रहए ।

सभ गोटे पाइ भजा गाइड द्वारा निर्धारित होटलमे गेलहुँ । बेंजिंगक पहिल दिनक खाना । खाना घुमबला टेबुलपर सजाओल गेल । वीसो प्रकारक सामग्री । इच्छा अनुसार खएलहुँ । तकराबाद सभ गोटे होटल पहुँचलहुँ । टोली काठमाण्डूसँ चलसं पूर्वे प्रज्ञामे एकटा निर्णय भेलैक जे चीनसँ औपचारिक निमंत्रण जे संस्था देने अछि (चाइना फेडरेशन अफ लिटरेरी एण्ड आर्ट सकिल) जकरा संक्षिप्तमे 'सीफलैक' कहल जाइत छैक तकर कार्यक्रममे दाउरा सुरुवालमे जाएब ठीक रहतप । ई कोनो नियम नहि रहैक पंचायतकाल जकाँ, मुदा एखनो राष्ट्रिय प्रतिनिधित्वकेँ अवस्थामे एहि पोशाकक उपयोग त होइते छैक ।

हमरा पहिने अनसोहांत लागल रहए, दुत पायजामा कुर्ता वा सूटमे ठीक रहत । मुदा नव सदस्यीय टोलीमे एकमात्र हम बागर देखि पड़ब ई प्रतिनिधित्व भावनासँ मेल नहि खाएत से सोचि हमहुँ दाउरा सुरूवाल बाजारसँ खरीद लेने रही । होटलमे अएबाक कारण रहैक ताही कार्यक्रममे जएबाक हेतु ड्रेसके बदलबाक आ से हम सभ दाउरा सुरूवालमे निचां जम्मा होइत गेलौं । आन गोटे त बेरा-मौकापर पहिरतो छलाह, हमरा पहिरने देखि उपकुलपति लगायत सभ सहयात्री मित्र लोकनि प्रशंसाक पुल बान्ह लगलाह । एहिमे हमरा नीक लागब सेहो छलैक किछु, त बेसी रहैक अपना जमातमे हमरो सामेल कऽ लेबाक सुखानुभूति । होटलक लान्जमे किछु फोटो सेसन सेहो भेल । हमरा सभक गाडी लऽ गाइड आबि गेल छल । सभ गोटे चाइना लेखक संघक कार्यक्रममे विदा भेलहुँ ।

लेखक संघक मित्र लोकनि गर्मजोशीसँ स्वागत कएलनि । एकटा बढ़का हैलमे आमने-सामने बैसबाक व्यवस्था रहैक । परिचयपात भेल । टोली नेता उप्रेतीजी अपन मन्तव्य रखलनि, ओम्हरको नेता विचार व्यक्त कएलनि । छलफल शुरू भेल । तकरा बाद अल्पहारक बाद उपहारक आदान प्रदान भेलैक । उपकुलपति जी काठमाण्डूसँ गैंडा आ हाथीक मूर्ति लओने छलाह जे प्लेनक उठापटकमे कए गोट टुटि गेल छलनि । जे साबूत छल तकरा उपहारमे देलथि आ तहिना ओम्हरोसँ प्राप्त भेलैक । आब हमरा सभक निर्धारित कार्यक्रममे 'चिड़ैक खोंता' (Birds nest) माने पूर्वमे सम्पन्न ओलम्पिक गाम देखबाक रहैक । (२००८ मे)

जहिया चीनमे ओलम्पिकक तैयारी भऽ रहल छलैक, हम सभ टेलिभिजनसँ ओत्त बनैत ओलम्पिक स्टेडियमक निर्माणक दृश्य सभ देखैत छलहुँ । कहल जाइत रहैक जे ओ अद्भूत कारीगरीक कमाल अछि जे इस्पातक डंटीक जोड़सँ निर्माण कएल जा रहल छल । जँ कि ओहिमे असंख्य तेहने डंटा सभक घुमावदार प्रयोग भेल छैक आ ओ कोनो चिड़ैक खोंता सन खास कऽ मुनियांक विनौटवला खोंता सन, तएँ एकरा ताहीं नामसँ जानल गेलैक । जे एकटा दृश्य आँखिमे बसल छल, तकरा प्रत्यक्ष देखबाक अवसरसँ अभिभूत छलहुँ । हम सभ ओलम्पिक स्थल विदा भेलहुँ । कनेक देरी भऽ गेल तएँ खोंतामे पैसि त नहि सकलहुँ, मुदा ओकरा लगमे जा कारिगरीक एहि अद्भूत मिसालकें जी भरि कऽ अवलोकन कएलहुँ । बगलेमे छैक 'वाटर क्यूब' अर्थात् पानिक घनाकार घर । कएकटा खेल ओहिमे सम्पन्न भेल रहैक ।

ओत्त हम सभ अपना-अपना ढंगसँ फोटो खिँचलहुँ । एकटा फोटो ग्राफर जे जबरदस्ती हमरा सभक ग्रुप फोटो खिचने रहए, चल बेरमे आधा घंटा बिचमे फोटो बना हमरा सभके देखौलक । फोटो नीक बनल रहैक । ओत बहुत कहैत रहए, बादमे दश युयानमे दर तय भेल आ एक-एक फोटो सभ गोटे लेलहुँ । एकटा बात एहि ठाम गजबक छल । हम इन्टरनेटमे पढ़ने छलहुँ, चीनमे मोलमोलाई खूब होइत छैक आ नक्कली टकाक व्यवहार सेहो । किछु बच्चा सभक खेलौना सभ तीस टका कहलक जे तीन टकामे देलकैक । एहुसँ मोलजोलक

अनुमान कएल जा सकैछ । काठमाण्डूक भृकुटीमंडपक दोकान मन पड़ि गेल ।

आब हमरा सभक टोली ६ बजेक निर्धारित कार्यक्रमक हेतु आतिथ्य संस्था सीफलैकक कार्यालय दिश बढ़ल । हम सभ ठीक समयपर पहुँचलहुँ । सिफलैक उपाध्यक्ष यांग चेङ्जी (Yang Chengzhi) भव्य रूपें स्वागत कएलनि । हमरा सभक एकटा सुन्दर सजाओल कक्षमे ल जाएल गेल । ओत्त एकटा बढ़का राउण्ड टेबुल रहैक, घुम'बला । रंग-विरंगक परिकारसँ भरल । सभक हेतु निर्धारित रहैक सीट । अपन-अपन कुर्सिपर बसैत गेलहुँ । परिचय पात भेल । आ तखन भेल विचारक आदान-प्रदान । दुनू दिशसँ विचारक आदान प्रदानक बाद उपाध्यक्ष यांग टोस्ट प्रस्ताव कएलनि । सभक आगां वाइन, आन ड्रिंक राखल रहैक । हमरा सन अलकोहल मुक्त सभक हेतु जूसक गिलास सेहो रहैक, धन सन । हमहुँ अपन बगल वला घरवैआकें जूसक गिलास भिडा चीयर्स कएलहुँ । पीअ-पीआबक दौर शुरू भेल । मित्र लोकनि रमि गेल छलाह । हम तीन गोटे कवावक हड्डी जकाँ सन्हिआएल छलहुँ । जेना तेना ई दौर समाप्त भेलैक आ खाना प्रारंभ भेल । स्व रूचि भोजनकवाद उपहार आदान-प्रदान भेलैक । एतहुँ उपकुलपतिजी टोली दिशसँ वंचलहवा साबूत गैंडा उपहारमे देलखिन्ह तँ ओम्हरसँ सभ टोली सदस्यकें बेरा-बेरी उपहार देल गेलैक । नीक उपहार छल ।

तकराबाद गूप्र फोटो भेल । सभ गोटे प्रशन्नतापूर्वक होटल विदा भेलहुँ । राति क नव बजल छल हएत, जखन

होटल पहुँचल रही । आने दिन जकां कपडा बदलि, दवाई खएलहुँ आ सुत चलि गेलहुँ । मोनमे एहि उत्साहके भरने जे काल्हि भोरे विश्वक सातम् आश्चर्य ग्रेटवाल देखबाक रहए ।

आइ आसीन ९ गते मंगल दिन । अर्थात. २५ सितम्बर २०१२ । मोनमे उत्साह त रहबे करए, जल्दी तैयार भ जलखई कक्षमे जा भरि पेट जलखई खएलहुँ । ओना एकटा खटको रहए, जे काल्हिए होटल दिशसँ कहल गेल छल जे आइ पानि पडि सकैछै, तएँ छता ल मात्र बहार होइ । ग्रेटवाल देखबालेल उबेर नहि रहत त की मजा अएतैक । जलखई खा होटलक लाउन्जमे अएलहुँ त होटलक काउण्टरसँ नओ गोट छता लेल गेल । सभ गोटेक हेतु एक-एकटा । ठीके बाहर मौसम बइमान भेल जा रहल छलैक । बेजिंगक मौसक छिरहिल्ला खेलायमे नामी रहल अछि । एक्के क्षण रौद, देह जरत, आ एक्के क्षण बदली, झिसी आ गरजैत मेघक प्रलय । ओना एखन बेजिंगक हेतु पर्यटकीय समय छैक । देश-विदेशक पर्यटक भरल अछि । एहु होटलमे बहुत पर्यटक सभ अछि । एकटा टटका भारतीय जोडा पता नहि हनीमून मनएबा लेल आएल अछि कि की, खूब सजिधजि क निकलल करैत अछि ।

गाडी आबि जाइत अछि । सभ गोटे अपन-अपन स्थान धरैत छी । टुरिस्ट बस हमरा सभकें ल ग्रेटवाल दिश बढ़ि जाइत छैक । एक घंटा चललाक चारूकात सघनधूनी लागि जाइत छैक । आ ओम्हर टिपिर टिपिर पानि पडब प्रारंभ भ जाइछ । जँ-जँ अगाडि बढैत छी, मेघ धनगर भेल जा रहल

छैक । भेल सभ बेरा गर्क । की देखब देवाल, आ कत्त घूमब ।

गाइड हमरा सभक बसक यात्राकें छोट करैत बोडालिंग ल अबैत अछि । एत्तसँ केबुलकार छैक, जे उपर देवाल लग पहुँचा दैत छैक । दश मिनट लगैत छैक । गाइड टिकट ल अबैत अछि आ हम सभ सुविधा अनुसारक केबुलकारमे बैसि जाइत छी । एत्त हवाक झोंक खूब चलि रहल छैक । पहिनो कहल गेल छल, आन दिनो एत्त जाड लगैत छैक, तएँ लोक कोट-स्वीटरमे अबैत अछि । आइ त आर पानिए पडि रहल छैक, हवाक बहब त छैहे । हम गर्म कपडा पहिरने त छलहुँए, उपरसँ गलेबन्द सेहो ल लेने छलहुँ जे एत्त काज द रहल छल । केबुल कारके उंचाई लैत देह सिहरि गेल - सोझे खड़ाईमे रहैक । दशमिनट धरि वर्षा, हवा आ केबुलकारक थरथराइत यात्रा । हम सभ स्टेशनमे पहुँचि उतरैत छी आ पंक्तिबद्ध भ देवाल दिश जाएबला बाट प'बढ लगैत छी ।

घरसँ बाहर निकलिते छाता खोल पडैत अछि । हम सभ देवाल चढ लागल छी । देह रोमाञ्चित भ उठैत अछि । दूर धरिक दृश्य धनगर धुनीमे विलिन भ गेल छैक मुदा देवालक घुमावदार स्वरूप नजरि आबि रहल छैक । हम सभ लगभग उतार-चढाब करैत एक घंटासँ उपर देवालपर चलैत छी । फोटोग्राफ होइत अछि । रौद नहि उगने छाता ओढि फोटो खिचाब पडैत अछि । हँ, कखनो क बुन्न छैक भऽ जाइत छैक त ओहुना किछु पोज लऽ लेने छी । चीनक सुरक्षाक हेतु बनाओल गेल ई दुर्ग-ओह अद्‌भूत अछि ।

युद्ध रणकौशलकें अद्‌भूत निर्माण । तएँ विश्वक सातम् आश्चर्यमे पड़ल । आब घूमबाक चाही ।

हम सभ फिर्ता हएबाक लेल एकठाम जम्मा होइत गेलहुँ, देवाले पर । उपकुलपतिजीक कथन छलनि -बेजिंगमे छी त किएने एकबेर नेपाली दूतावास जाएल जाए । भेलै जे भ आएल जाए । ओ फोन कऽ बात मिलौलनि । तुरंत अएवालेल कहलकन्हि । हम सभ सोझे दूतावास गेलहुँ । भव्य अतिथि कक्षमे बैसाओल गेल । राजदूत महेश मास्के अएलाह । परिचय भेल । ओ दूतावास देखौलनि । नेपाल-चीन सम्बन्धक बारेमे बात कएलनि । फेर बैठक कक्षमे चाह-पानी आएल । किछु दिनपूर्व ललितकला प्रज्ञा प्रतिष्ठानक कुलपति कलाकार किरण मानन्धरक आगमन आ चित्र बनौनाइक चर्च करैत ओत्तहि राखल चित्र सभ देखौलनि । नीक चित्र सभ रहैक - सभ दूतावासक सम्पत्ति । वाह किरण दाई ! दूतावास परिसरकें अवलोकन करैत हम सभ विदा लेलहुँ ।

आब भोजनक जरूरी सभकें रहैक । भव्य रेष्टुराँमे लऽ गेलाह गाइड महोदय । ओत्त रंग विरंगक भोजनक परिकारमे डुबा देलनि । हम सभ उबजुब करैत कोनो बिक्री कक्ष दिश खास कऽ एप्पल स्टोर दिश विदा हएबाक सोचैत छलहुँ । मुदा भेलैक जे पहिने निर्धारित कार्यक्रम भऽ जाओ । तएँ हमरासभकें पहिने नेपाल चीन मैत्रीक प्रतीक उज्जर पैगोडा( ) दिश बढ पडत । सभ ओम्हरे सोझिहाइत अछि, मुदा एकटा शर्तक संग जे एप्पल स्टोर धरि अवश्ये जाएल जएतैक ।

अरनिकोद्वारा निर्मित पेगोडा

हमसभ स्कूलमे पढैत काल अरनिकोक सम्बन्धमे खुब पढैत छलहुँ । ओ माहिर कलाकार छलथि । तिव्वत सँ चीनधरि अपन कलाक प्रदर्शन कएने छलथि । नेपालक ओहि महानकलाकारक कृति देखबाक इच्छा स्वभाविक छल । हमसभ ओतय गेलहुँ । मुदा ओतय पहुँचलाक बाद कनिक धक्का लागल, अरनिको बनौने पेगोडाकेँ मरम्मत सम्भार करबाक लेल चारू दिससँ बांसक सिढीसँ छेकल रहलाक कारणें नीक जकाँ देखब सम्भव नहि भेल । मुदा ओतय भव्य बुद्ध मन्दिरसभ बना कऽ सजाओल गेलाक होइतो अरनिकोक कृतिकेँ उपेक्षित जकाँ राखब हमरा असहज जकाँ लागल । अरनिकोक मूर्ति सेहो ओही आंगनमे राखल गेल अछि । ओहि सम्बन्धमे कोनो बिशेष सूचना राखयकेँ आवश्यकता नहि देखल गेलासँ मोन खीन्न भ गेल । अरनिको (१२४४–१३०६ ई.)क ओ मूर्ति बालकृष्णसमक चित्रक आधारमे बनाओल गेल अछि से जानकारी पौलहुँ । मुर्तिक निचां तामाक पातमे निम्न वाक्यसभ लिखल गेल अछि **–नेपालक महान बास्तुकलाविद् तथा कलाकार अरनिको नेपाल आ चीन बीच सांस्कृतिक आदान प्रदान एवं मित्रताक सम्बाहक छलथि । ओ म्याओ पिङ शःकेँ स्वेत चैत्य सहित बहुत भव्य भवन संग दिव्य मूर्ति आ प्रतिमासभक निर्माण कएने छलथि । उच्चस्तरक असंख्य कलात्मक बस्तुसभक संग ओ बहुतरास धार्मिक उपकरणसभ सेहो बनौने छलथि । ओ अपन अतुलनीय कलाशैली पाछु धरि विकसित होइत रहे कहि कलाकारसभकेँ**

दक्षता उपलब्ध कराबयबला कार्यशाला बनौने छलथि । ओ युवान साम्राज्यकालक ४५म् बर्षमे ओहि राज्यक सेवामे सम्मिलित भेल छलथि । ओ ल्याङ राज्यकेँ राजाक पदवी आ प्रतिभाशालीक मानार्थ उपनामद्वारा विभूषित कएल गेल छलथि । नेपालक श्री ५ कें सरकार हुनका राष्ट्रीय विभूति घोषित कएने छल ।

तहिना मूर्तिक आधार स्तम्भकेँ दोसर कात सेहो लिखल अछि– **ई प्रतिमा महान कलाकार अरनिकोकेँ स्मरणमे नेपाली जनताक दिससँ नेपाल पर्यटन बोर्ड, हिमालय बैंक तथा शाही नेपाल वायुसेवा निगमकेँ सहयोगमे अरनिको समाजद्वारा समर्पित कएल गेल अछि । (२०५९ साल वैशाख १८ गते May 2002)**

एहि प्रकार दानदातव्यसं प्राप्त मूर्ती राखयकेँ लेल कोनो घर, शेडक निर्माणधरि करय नहि सकबामे ककर कमजोरी मानब ? चिनियांसभ अपना सांस्कृतिक सम्पदासभकेँ देखरेखमे जाहि प्रकार ध्यान दैत अछि ओ हमरासभकेँ सीखक माध्यम किया होबय नहि सकल अछि ? तखन रहल दोसर देशक बात त दूताबास त अछि ने । ओ की करैत अछि ?

पैगोडा भितर जा नीक जकाँ देखय नहि पौलाक बादो अरनिकोक कृतिकसंगक भेट मनकेँ प्रफुल्लित कऽ देलक । उज्जर पेगोडा (White Dagoba) कँ नामसँ चिन्हल जायबला एहि स्थानमे नेपालीसभकेँ लेल प्रवेश निःशुल्क राखल गेल अछि । चलु धन्य सन । आब सभक नजरि स्टोर ताकैमे बेहाल छल,तकर समाधान गाइड मि.च्याउ कएलक आ हमसभ झिम सिम पानिमे छत्ताक ओतमे दोकानमे पैसलहुँ ।

बड़ कठिनाईसँ ई समय निकालल गेल रहए । हम काठमाण्डूसँ एप्पल-५ किनबाक लेल तैयार भऽ कऽ आएल रही । टटके निकलल छल आ भारत-नेपालक बाजारमे अएबामे किछु मास समय रहैक । से कतेक कठिनसँ एकटा दर्शनीय कार्यक्रमकें लात मारि बिक्री कक्षमे पैसल छलहुँ । एकसँ एक उत्पादन । एप्पलक सभ उत्पादन महग । टैव चालिससँ असी हजार धरि देखि पड़ल । एप्पल-५ नहि आएल रहैक । एप्पल-४ आ ४-एस मात्र रहैक । बड़ गुनधुनक वाद हम एप्पल-४ लेबाक निर्णय कएलहुँ । हमरा सँगे दू गोटे आर लेलनि । साँझ पड़ि गेल रहैक । डिनरक हेतु होटलमे पैसलहुँ । इच्छा भरि भोजन कएल । ई कहबाक बात छै, कतबो पकवान सभ रहैक, हम निरन्तर अधे पेट खा कऽ उठल करी । सभ सामग्री हमर सन्देहकेँ घूबैत रहलासँ अन्न नहि घोटाए । बरू सागपात प्राण बचाओल करए ।

तकरावाद चीनक परम्परागत लोक सांस्कृतिक प्रदर्शनक अवलोकन हेतु 'लाओत्से टीहाउस'मे लऽ जाएल गेल । एहि ठाम प्रवेश शुल्क रहैक तीन सय युयान अर्थात् नेपाली लगभग वियालिस सय टका प्रति व्यक्ति । टेबुल रिजर्भ रहैत छैक । पैसा देल गेल आ प्राथमिक रूपसँ निःशुल्क जूस आ विस्कुट उपलब्ध कराओल गेल । चूस्कीक सँग चीनक विशिष्ट सांस्कृतिक मनोरम झलक ।

चीनमे परम्परागत संस्कृति प्रतिक जे रूझान सुन्दर, सजाओल मंचपर हम सभ देखि रहल छलहुँ, मंत्रमुग्ध कऽ देने छल । वास्तवमे किछु दशक पूर्व धरि ई स्थिति नहि रहैक । १९६० ई.

मे जखन चीनमे सांस्कृतिक क्रान्ति भेलैक आ बहुतो परम्परागत कला, नृत्य, संगीत आदिपर रोक लगादेल गेलै तखन त समाजमे खासे रूझान नहि देखि पड़ैक । मुदा जखन क्रान्तिक प्रभाव समाप्त भेल, परम्परागत संस्कृति फेरसँ समृद्ध होब' लागल आ आइ देखा रहल नृत्य, गीत आ 'ओपेरा' देखबाक शौभाग्य चाइनिज जनता आ विश्वक विभिन्न भागसँ आयल राजनयिक, पर्यटक, व्यापारी आ आम नागरिककें भेटि रहलैक अछि । लगभग दू घंटा धरि कतेरो आकर्षक कार्यक्रम प्रस्तुत भेल रहए । कतेको बेर विचार आएल हम सभ पश्चिमी संस्कृतिक प्रभावमे पड़ि कऽ अपनो लोक संस्कृतिक विशिष्टताकें रूपान्तरित करैत जा रहल छी आ 'फ्यूजन' के नामपर गौरवबोध कऽ रहल छी । चीनक एहि चाह संस्कृतिक नामपर परम्परागत गौरवपूर्ण सांस्कृतिक प्रदर्शनक अद्‌भूत संयोग ।

आब होटल दिश विदा होइत छी । बाटमे तियानमेन चौक रातिक झकझकीमे नहा रहल देखैत छी । एकरा राति क देखबाक अपन फूट आनन्द हेइत छैक । काल्हि बेजिंग छोड़बाक छैक । होटलमे तकर इन्तजाम सेहो करबाक अछि । सभ किछु व्यवस्थित कऽ भोरे निकल' पड़तै । होटल पहुँचि सोझे कोठरीमे जाइत छी । कपड़ा बदलि औषधि खा विछाओन पकड़ि लेब उचित बूझि पड़ि रहैत छी ।

आसीन १० गते बुधदिन २६ सितम्बर २०१२ । अहल भोरे बेजिंगकें अभिवादन करैत छी । भोरका वेजिंगक स्वरूप देखिते बनैत छैक । हेलो बेजिंग । भोरे आने दिन जकाँ तैयार भऽ

निचां उतरैत छी, मुदा एहि बेर संगमे बेग सभ सेहो रहैत अछि । अर्थात् हम सभ होटल छोड़ि रहल छी । जलखई खा कऽ कार्यक्रममे विदा भऽ जएबाक छै, जत्तसँ सोझे हवाई फिल्ड जाए पड़तै ।

जलखई होइत छैक । तकराबाद एशिया पैसेफिक स्टडीज अझ चाइना एकेडमी अझ सोसल साइन्सक आमंत्रणमे ओकर कार्यालय दिश बढैत छी ।

ओत्तहुँ स्वागतक भव्य तैयारी रहैत अछि । पुरना घर जे परम्परागत संस्कृतिकें प्रतीक छलमें ओकर कार्यालय छलैक । एत विभिन्न देशक विद्वान अध्ययनक हेतु अबैत अछि । परिचय पातक वाद जखन अन्तरक्रिया प्रारंभ भेल तँ एकटा महिला शोधार्थी नेपालक विषयमे एहन-एहन प्रश्न कएलक जे होश गुम्म कऽ देने रहैक । माने अध्ययन आ दैनिक अपडेट, गजबके व्यवस्था आ बुद्धि ।

कार्यक्रमक वाद उपहार आदान-प्रदान भेला पर ग्रुप फोटो भेलैक । हम सभ हुनका सभसँ विदा लऽ बाहर निकलैत छी । गाइड मि. च्याउ आब भोजनक हेतु एकटा परम्परागत मुदा शानदार मुस्लिम होटलमे लऽ जाइत अछि । ओत फेरसँ रूचि अनुकूलक खानाक दौर शुरू होइछ ।

हमरा सभकें २.२५ कें फ्लाइटसँ सियान प्रान्त जएबाक रहैत अछि । तएँ भोजनक उपरान्त एयरपोर्ट दिश बढ़ि जाइत छी ।



प्रसंग - एक/चित्रावली



रातिमे माओ स्मृति भवन ।



चाहक संग गीत-संगीतक आनन्द लैत ।



चीनक परम्परागत सांस्कृतिक नृत्य ।



कार्यक्रमक एक रोचक झलक ।



नेपाली दूतावास (चीन)मे प्रतिनिधि मंडल ।



ग्रेटवाल पर फोटो खिंचएबाक मुद्रामे लेखक ।



उपाध्यक्षसं उपहार ग्रहण करैत लेखक ।



चिड़ैक खोंता लग लेखक ।



पूर्व चिनियां सम्राटक दरवार परिसरमे टोली ।



दरवार परिसरमे फोटो सेसन ।



दरवार परिसरमे प्रतिनिधि मंडल।



दिनमे माओ स्मृति भवन।



चीनक ऐतिहासिक तियानमेन चौक।



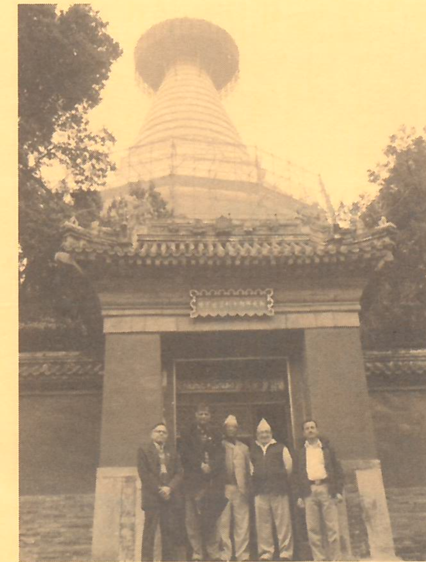
बेजिंग शहरक सौन्दर्य।



कुनमिंग एयरपोर्ट पर प्रतिक्षामे ।



हवाई जहाजमे लेखक ।



उज्जर पैगोडाक मुंहथरिपर प्रतिनिधि मंडल ।

बेजिंगक होटल लाउन्जमे दाउरा-सुरुवालमे लेखक ।



प्रसंग : दू

सियान



चीनक सांस्कृतिक राजधानी सियानमे

हमरा सभक कार्यक्रम कसल छल जे कतहु स्वतन्त्र भऽ घुमबाक अवसर नहि देल गेल । एकटा गाइड आ दू भाषिया संगे रहैत छल त कतहु घुमबला स्थान जएबाकाल हमरा सभकसंगे व्यवसायिक मार्ग दर्शककें राखल जाइत छलैक जे अंग्रेजीमे दर्शनीय बस्तु सभक महत्वकें बुझएबाक प्रयास करैत रहैत छल । वेजिंगमे हमरा सभकें अतिरिक्त गाइडक जरूरति नहि बूझल गेल रहए । मि. च्याउ दू भाषिया आ गाइड दुनूक काज करैत रहए । ओ देश-विदेश घूमल नीक स्वभावक युवक अछि जे चिनी प्रतिनिधि मंडलक संग नेपालो आबि चुकल छल ।

हमरा सभकें वेजिंगसं २६ ता.कऽ सियान जएबाक पूर्व निर्धारित कार्यक्रम अनुसार सीए १२०१ नं.क उड़ानसं २.३० बजे अपराह्न हम सभ सियानकें लेल उड़लहुँ । ई सफर दू घंटाक रहैक । वास्तवमे हमरा सभकें एक्को बेर द्रुत गतिक रेलयात्राक अवसरक प्रतिक्षा रहए । चीनक सभ महत्वपूर्ण शहर, राजधानीसँ ई रेलयात्रा जूड़ल रहैत अछि । जँ कि कम समयमे बहुत किछु देखएबाक आ कार्यक्रम सम्पन्न करबाक रहैक तएँ हमरा सभक आन्तरिक यात्रा सेहो हवाई जहाजेसँ निर्धारित कएल गेल रहए ।

जे से हम सभ दू घंटा अर्थात् चीनक समय अनुसार ४.३० दिश सियानक हवाई अड्डापर उतरलहुँ । मुग्धे भऽ गेलहुँ हवाई अड्डाक विशालता आ स्वच्छताकेँ देखि । सभ औपचारिकता पुरा कऽ हम सभ बाहर अएलहुँ त स्थानीय आतिथ्य संस्थाक प्रतिनिधि लोकनि पर्यटक गाडीक संग उपस्थित रहथि । परिचयपात भेल आ ताही क्रममे एकटा पतरकी लड़कीसँ परिचय कराओल गेल जे हमरा सभक स्थानीय गाइड छलीह । हमरा त भ्रम भऽ गेल, गत राति वेजिंगमे जे नृत्य देखने रही से इएह कन्याक त नहि रहैक । बन्धुवर विष्णु विभु घिमिरे धरिकेँ हमर सन्देहमे सत्यता नजरि अएलनि । फेर गाइड मि.च्याउसँ पुछल गेल तखन बात फरिछाएल जे दुनू दू व्यक्तित्व अछि ।

हमरा सभक सम्मानमे रात्री भोजक व्यवस्था रहैक । भव्य, आकर्षक । हम सभ सोझे रात्री भोजमे गेलहुँ । सभ तैयार भऽ गेल रहैक । बातचीत भेलै । चिनियां आतिथ्य संस्थाक पदाधिकारी लोकनि सभकें स्वागत कएलनि । बातचीतक बाद रात्री भोजक हेतु आग्रह कएलनि आ सभ गोटे आनन्द सं भोजन करैत गेलहुँ ।

भोजनक बाद हम सभ होटल लऽ जाएल गेलहुँ । होटल रहए - ग्रैण्ड सोल्यूक्स इन्टरनेशनल होटल, सियान । भव्य होटल, भव्य कमरा । छठम तलापर हमर आवास रहए - प्रायः ६०५ नं.क कोठरीमे । प्रति व्यक्ति एक कोठरी एतहु रहैक ।

संभुका सभ काजसं निपटारा भऽ होटलक कनेक बेसीए आरामदायी विछाओनपर सुतबाक उपक्रम कर' लगलहुँ । एक त एहन अनजान ठाममे सुतब कठिन आ जं आँखि लागियो गेल त भोरोक प्रतिक्षा नहि । कखनो आँखि खूजि सकैत अछि । से तहिना चारि बजे आँखि खूजि जाइत अछि ।

असीन १२ गतेक चारि बजे । खूब प्रयास करैत छी, नीन्न किएक आओत ! चलु तखन दैनिकी निपटाली आ कनेक फ्रेश हवामे घूमि आबी । ६ बजे हम कोठरीसँ बहरा गेल रही । ७.३० बजे रूचि अनुसारक जलखई खाइत गेलहुँ । आइ टान राजघरानाक सुरक्षित दरबार देखबाक हमरा सभक कार्यक्रम रहए । जलखईक बाद ओमहरे चललहुँ । ओह भव्य आ आकर्षक । आइसं १३ सय वर्ष पूर्व सियान तकर राजधानी रहए । आइयो ताहि राजघरानाक प्रति आकर्षण अद्भूत छैक । चीनमे राजघरानाक विरूद्ध क्रान्ति भेल, गणतन्त्र लाओल गेलै, मुदा राजघराना सभक प्रति श्रद्धा एखनो देखल गेल छैक । बरू ओकरा सभक श्रीसम्पत्तीकें सरकार यथावत् रूपें सुरक्षित राखि पर्यटकीय महत्वक बनादेने छैक । नीक लगैत अछि चीनक ई नीति... । परम्परा प्रति आकर्षण आ आर्थिक उपार्जनक ठोस माध्यम ।

चीनके बारेमे भारतीय संचार माध्यमसं खास कऽ पहिने चलैत अल इंडिया रेडियोसं हम नीक जकाँ परिचित भेलहुँ, जखन कहल जाइत रहए - हिन्द चीन, भाइ-भाइ ! आ एक समय भयंकर युद्ध भेलैक आ सभ भैयारीकेँ बन्दूकक घोड़ासँ

पस्त करैत चीन भारतक किछु महत्वपूर्ण भागपर कब्जा जमा लेने रहए । खूब घोल फचक्का भेल रहैक । तहिये चीनके बारेमे जिज्ञाशा भेल आ ओकर बढ़ैत जनसंख्या आ सैन्य शक्तिक जानकारी भेल रहए ।

नेपालके उत्तरी पडोसी चीनक जानकारी तहियो भेल रहए जाहिया वडा महाराजा पृथ्वीनारायण शाहक बचनकें पढ़ने रही दू पाथरक विचक कमलक फूल" । ई उत्तरबरिया पाथर अनेरे अबूह, भयानक आ बदमाशसन लागए बालमनपर । भारत तँ तहियो अपन घर-आँगन बुझाइत रहए ।

आब जखन चीनकेँ भितरी भागकें देखबाक अवसर आएल अछि तँ हम गुम्म छी । बाहिरी आवरणक भितर बहुत किछु विशिष्टता अपना भितरमे नुकौने अछि चीन । चीनक विकासक गति एयरपोर्टसं शुरु भ नगरक गल्ली कोना धरि पहुंचि गेल से हमसभ महसुस कएने छलहुं । सडककातमे गाछ रोपबाक अद्भूत तरिका छैक चिनियाँसभकें । सडकक कातेकात कलम नहि, सौंसे गाछेके कँाटछँाट क रोपैत अछि आ तकरे भरकदार बना क शहरके हराभरा बनबैत अछि । प्रत्येक भव्य महलसभक चारूकात पर्याप्त खाली जमीन छोडल रहैछ जाहिमे सडक, बगैंचा, सडकक दुनूकातमे गाछसभ रोपले जएबाक चाही । पर्यावरण प्रति चिनियाँ रूचि मुग्ध बनौलक हमरासभकें ।

विद्युतक कमी ओत्तहु छैक कि से जिज्ञासा छल । मुदा सात दिनक अवधिमे एको बेर विद्युत गेल नहि । विद्युतक अभाव

नहि छल से बात नै । मुदा तीन तरिकासं विद्युत उत्पादन कैलासं कमी नहि होब द रहल छैक । एक त हाइड्रोपावरसं, दोसर सौर्य ऊर्जासं आ तेसर हावाचक्कीसं । मेहिनती, लगनशील आ आधुनिक प्रविधिक मर्मज्ञ, ज्ञाता चिनियाँसभ अपन देशके अमेरिकाक हाराहारीमे पहुचएबाक आजुक दिनमे लागि पडल अछि । विकासमे दोसर आ अर्थमे तेसर देशक विशिष्टता हासिल करबला चीन दुनियाँक लेल अनेको वस्तुमे अनुकरणीय रहल अछि । एहन विकसित आ आधुनिक वैज्ञानिक पहुँचक उचाइमे पहुचल चीनक बुढा आइफोनक प्रयोग कर नहि चाहैत अछि से मि.च्याउक कहब हमरा किछु समय चिंतामे पाडि दैत अछि । बात छै जरूर एहिमे ।

यात्रा प्रसङ्गक एहन छोटमोट सन्दर्भसभ निरन्तर चिन्तनक लेल उत्प्रेरित करैत आएल अछि आ ई जारियो रहत से विश्वास कएल जा सकैछ । एकस एक विशिष्ट उपलब्धि प्राप्त कएने अछि चीन ।

तेहने विशिष्ट उपलब्धी छैक 'टेरिकोटा वैरियरर्स एण्ड हौर्स । अर्थात् माटिक सैनिक आ घोड़ा । अद्भूत संग्रहालय । एहिमे माटिक लड़ाकू सैनिक आ तकरा हेतु प्रयुक्त होबबला घोड़ा सभक अद्भूत संग्रह छैक जे कीन राजघराना (२११-२०७ ई.पू.)क समयक छैक । १६,३०० स्क्वायर फीटक घेरामे तीन खधिआमे संरक्षित ई विश्वक अद्भूत करामातकें उत्खनक संगहि जनताक हेतु खोलल गेल छल ।

बात ई भेलै, मार्च २९, १९७४ ई.मे स्थानीय सियांग (Xiyang) गामक (लिगटाँग कन्ट्री) लोक सभ पानिक हेतु बोरिंग करैत छल कि ओकरा सभके मार्टिक मूर्ति आ पीतरिक हथियार सभ भेटलैक । गामक मुखिया जे एखनो जिवित अछि आ पर्यटक सभक हेतु संग्रहालयक कार्यालयमे उपलब्ध रहैत अछि, एहि बातक खबरि स्थानीय सरकारकें कएलक । जुलाई १९७४ ई. मे पुरातत्ववेत्ता सभक पहिल दल पठाओल गेल । ओ सभ ओहि स्थलकें घेरा दऽ काज प्रारंभ कएलक । धरतीक नीचां गड़ल, क्षत-विक्षत माटिक मूर्ति, घोड़ा, किछु पीतरिक रथ सभकें बहुत महीन ढंगसँ खेजवीन कऽ १ अक्टुबर १९७४ ई. कऽ जनताक हेतु खोलि देलक । कीन राजघरानाक संस्थापक आ चीनक पहिल सम्राट कीनसीहंग (Quinshihuang) द्वारा स्थापित आ सुरक्षित कएल ओ संग्रहालयकें देखि जनता हतप्रभ भऽ गेल । पीट-एक, पीट-दू, पीट-३क नामसं ओहि विशाल घेरा बिच उपर विशाल क्षेत्रफलमे चदरासं बनाओल छतक निचां सुरक्षित कएल जा रहल ओ अद्भूत सामग्री देखबा लेल विश्वक पैघ-पैघ राजनीतिक हस्तीक संग-संग सामान्य देशी-विदेशी पर्यटक सभक निरन्तर आवाजाही रहैत अछि । कतेको राष्ट प्रमुख सभ ओत पहुचि चुकल छथि आ विश्वक एहि अद्भूत निर्माणक प्रशंसा क चुकल छथि ।

हम सभ पहिल खधिआ (पीट) कें देखैत छी । दूर-दूरधरि मूर्ति सभ देखि पड़ैछ । चारू भर रेलिंग लगाओल गेल छैक ।

पर्यटक, दर्शक सभ घूमि-घूमि कऽ मूर्ति सभक अवलोकन करैत अछि । पहिल खधिआ कनेक नमहर छैक । ई १ अक्टुबर १९७९ कऽ खोलल गेल छल । एहिमे आगाँसँ सैनिक सभ आ पाछासँ ओकर रथ सभ छैक । रथोक हालति दुरूस्त नहि अछि । कहल जाइछ कीन राजघरानाकेँ परास्त कएनिहार दोसर शासक एहि सभ मूर्तिक संग्रहालयकें नष्ट कऽ देने रहए, आगिलगा देने रहैक । ओकरा सभक हाथमे देल हथियार लुटि लेल गेलै । एखनो आगि लागल स्थल सभ देखि पड़ैत छैक ।

दोसर खधिआ (१९७६ ई. मे भेटल छलैक)मे एक हजार सैनिक, नब्बे काठक रथ छैक । ई १९९४ ई. मे खोलल गेल छल । तहिना १९७६ ई.मे तेसरमे खोजवीन शुरू भेल । एकरा सशस्त्र सैनिकक कमाण्ड सेन्टर सन हएबाक बात पुरातत्वविद् आ युद्ध विशेषज्ञ सभ कहैत छथि । ई १९८९ मे खोलल गेल छल । एहिमे ६८ सैनिक, एकटा लड़ाईक रथ आ चारि घोड़ा छल । आब तँ एहुमे संख्या बढ़ल छैक । एहि खधिआकेँ देखलासं लगैत छैक जे कोना छल हएतैक आन खधिआक मूर्ति सभ । हाथ कतहु, टांग कतहु तँ माथ कतहु । सभकें बड़ मनोयोगसँ जोड़ि कऽ पूर्ण आकार देल गेल अछि । चिनियां पुरातत्ववेत्ता सभक ई अद्भूत कमाल कहल जा सकैछ ।

तीनू खाधिमे सभ मिला कऽ सात हजार सैनिक, घोड़ा, रथ आ हथियार सभ अछि । युनेस्को १९८७ ई.मे एकरा विश्व

सांस्कृतिक सम्पदामे सामेल कएलक आ तकरा बाद तँ पर्यटकक ताता लागि गेल छैक ।

जे गामक नाम लगो पासमे केओ जनैत नहि छल, से राताराति विश्व भरिमे प्रसिद्ध भऽ गेल । एहि ठामक संग्रहालयमे जे फूटसँ बनाओल गेल छैक, दू सेट पीतरिक सारथी सहितक रथ १९८० ई.मे सम्राट किनक समाधि स्थलसँ प्राप्त कऽ राखल गेल छैक, कला आ प्राचीन सम्पदाक अद्‌भूत नमूना अछि ।

पहिल खधिआक दक्षिणमे सर्किल भिजन हौल छैक । ओत्त थ्रीडी प्रविधिसँ फिल्म देखाओल जाइत छैक जे बीस मिनटक होइ छैक । ओहिमे टेराकोटाक मूर्तिक इतिहास देखाओल गेल छैक जे कोना कऽ ई बनल । हम सभ मंत्रमूग्ध भऽ देखलहुँ आ आइसँ हजारो वर्ष पूर्वक चीनक कीन राजघरानाक परिसरमे अपनाकें पबैत गेलहुँ । ई २२०० वर्ष पूर्वक इतिहास छल ।

सूचना देल गेल एत्त वार्षिक २ मिलियन पर्यटक अबैत अछि । विगत बीस वर्षमे ५० मिलियन लोक देखि चुकल अछि । टेरोकोटाक कार्यालयमे हम सभ पहुँचैत छी । ओत्त टेराकोटासँ सम्बन्धित एकटा गतगर पुस्तक किनलहुँ सय युयानमे । एहिमे थपल विशेषता ई जे सरकारके सूचना देवबला कृषकसं हस्ताक्षर करा लेबाक अवसर भेटल रहैक । ई संयोगेस लोकके भटैत छैक । एहि मानेमे हमसभ भाग्यशाली भेलहुं जे ओ भेटलाह । १०० युयानमे एकटा पुस्तक आ टेरीकोटाके एकटा एलबम ।

आब हमरा सभके भोजनक हेतु बाहर ल जाएल गेल जत नीक नीक खानाक संग बेंगक तरकारी विशिष्ट परिकारक रूपमे परसल गेल रहए । कहुना जान बचल रहए ।

तकराबाद विशिष्ट भवनमे लऽ जाएल गेल जँ शानक्सी इतिहास संग्रहालय (Shanxi History Musium) छल । जून २०,१९९१ ई. मे एकरा आम जनताक हेतु खोलल गेल रहैक । ई चाइनाक पहिल आधुनिक संग्रहालय थिक । एकर क्षेत्रफल ७० हजार स्क्वायर मिटरमे पसरल छैक । ५६००० स्क्वायर मिटर क्षेत्रमे एकर भवन सब छैक । आ जत्त एकर प्रदर्शनी हौल छैक ओएह मात्र ११००० स्क्वायर मिटर क्षेत्रमे बनल छैक । एहि विशाल संग्रहालयमे चीनक विभिन्न प्रान्तसं संकलित ३,७५००० थान पुरातात्विक सामग्रीसब राखल गेल छैक । आमदर्शकके लेल खुजलाक बाद एखन धरि १० मिलियन लोक एकरा देखि चुकल अछि ।

प्रवेश करिते एकटा पाथरक विशाल सिंह आकर्षित करैत अछि आ फोटोक दौर शुरू भऽ जाइछ । भितर गेलाक बाद तँ अद्‌भूत नजारा देखि पड़ैछ । ओहि ठाम ईशाक दशसँ आठ शताब्दी पूर्व धरिक सामग्री देखल । वर्तन, हथियार, खोपड़ी आ आन-आन वस्तु । लागल-चीनक एहि प्रागैतिहासिक सामग्रीक प्रभाव विश्वक आन क्षेत्रपर अवस्से पड़ल हएतैक । ओत्त टान राजघराना द्वारा प्रयोग कएल सामग्री सभ राखल रहैक । ओत्तहि पीतरिया सारथी सहितक रथ देखने रही । प्राचीन पीतरिक कटोरी, सुवर्ना आ आन-आन पात्र ।

चीनमे जखन ह्वेनसांगसं साक्षात्कार कएल

हमरासभके चीनक सांस्कृतिक नगर सियानमे उपलब्ध कराओल गेल गाइड मीस मोनिका (पश्चिमी नाम) आसीन १२ गते भिनसर Big wild goose pagoda भ्रमण करबैत काल बुद्ध धर्म आ दर्शनक बात सम्झबैत कहैत छली- "भारतमे जन्मल गौतम बुद्ध... ।" तत्काल बातके कटैत प्रतिनिधि मण्डलक नेता नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठानक उपकुलपति गङ्गाप्रसाद उप्रेती भनकि उठलाह- 'हे, ओना नै बाज । गौतमबुद्धक जन्म भारतमे नै नेपालमे भेल छल लुम्बिनीमे । तों अपन कथनकें ठीक कर !' हमरासभक सात दिनक संघति आ बातचीतमे लगभग आत्मियताक स्तर धरि पहुचि गेलि मोनिका एकक्षण थकथकाइत छैक, उपकुलपतिक अनुहारदिश टकटकी लगा क देखैत बड चतुरतापूर्वक अपन कथनके संशोधन करैत बजैत अछि-ठीक छै, हम सुधार करब ।

मुदा हमर मन नै मानैत अछि । हम अपन बात रखैत छी- 'हैन सर ! नै श्रीमान,यी भ्रमपूर्ण जानकारी ई अपन प्रशिक्षण वा अध्ययनेसं पौने अछि आ यी एकर दैनिकी थिकै । एत्त भारतीय पर्यटकसभ प्रशस्त अबैत अछि् । ओकरोसभक बीच सेहो कहनही हएतैक । यी एकर रटाइ थिकै, सुधार भइएनै सकैए । बरु नेपाली राजदूतावासके एहिमे पहल करैत नहि देखल गेल अछि । चिनियाँ भाषामे गौतमबुद्ध सम्बन्धी सामग्री वितरण कएल जा सकैक त नीक होइतैक ... ।' ओना त उपकुलपतिजीकें

विश्वास छलनि- ओ आब अपन कथनके अवश्य सुधार करत । ओना हम आनो यात्रा संस्मरणमे गाइडसभके एही तथ्यपर जोड दैत प्रसंग पढने छी ।

यी हमरासभक सातदिने चीन भ्रमणक पहिल कटु अनुभव छल । ओ पैगोडा चीनक प्रसिद्ध बौद्ध पेगोडा छल जत्त बौद्ध भिक्षुसभ व्यापक रूपमे बास बैसैत अछि । ताङ राजवंशक प्रारम्भिक समय सन् ६२९ दिश चिनियाँ यात्री ह्वेन साङ (Xuan Zang) भारत यात्रा बएने छल । ओत्त ओ लगभग १५-१६ वर्ष बिता क भाषा सिखलक, बौद्ध साहित्यक संकलन कएलक आ सन् ६४५ मे चीन घूरि आएल अपन जन्मभूमि सियान । ओ सन् ६१३ मे बौद्ध भिक्षु बनल छल आ हुनक बौद्ध भिक्षुक नाम त्रिपिटक (Tripitaka) छल । तत्कालीन राजाद्वारा हुनका सम्मानपूर्वक Temple of Da ci'an क प्रमुखक जिम्मेवारी देल गेल आ ग्रन्थ अनुवादक लेल छुट्टे भवनके निर्माण करौलनि । हमसभ ओत्त पहुचलहु आ ओत्तुक्कावस्तुसभ विस्तारपूर्वक देखबाक आ बुझबाक प्रयास कएल ।

ओहि टेम्पल क्षेत्रमे रहैत गाइड मोनिका यद्यपि बौद्ध सम्बन्धी धारणा रखैतकाल पुनः पुरना बात नहि आबए तकर अियाल रखैत रहलीह । मुदा निरन्तर एक्के घोकाई रटैत रहलापर आदतसं एकाध बेर जिह स्खलन नहि भेल से नहि । बादमे ओ सुधार कएलीह वा नहि मुदा ई विचारणीय धरि अवश्य अछि । ई. सन् ११९ पूर्व सियानमे वेष्टर्न हान डाइनेष्टी समयदिश

एत सिल्क कारोबार होइत छलैक । बादमे इएह सिल्क व्यापार सियानहोइत समुद्रतट धरि पसरल । इएह व्यापारिक बाट बादमे 'सिल्क रोड'क नामसँ प्रसिद्ध भ गेल । जखन चीनमे सन् २५ दिश इष्टर्न हान पिरियडक समयमे भारतीय बुद्धिज्म चीनमे प्रवेश पौलक । सम्भवतः ओकर बाट सेहो उएह 'सिल्क रोड' छल ।

ताङ राजवंशक प्रारम्भिक समय सन् ६२९ दिश ह्वेन साङ उएह सिल्करोडबाटे भारत धरिक यात्रा कएने छल- बुद्ध साहित्य, दर्शन प्राप्त करबाक लेल । ओकर सन् ६५४ मे मृत्यु भ गेल ।

हमसभ विस्तारपूर्वक ओहि पेगोडाक जानकारी प्राप्त कैल आ मनमे उठल अनेको जिज्ञाशाक सेहो शान्त करबाक अवसर पौलहुँ । बाहर अबैत छी त एकटा विशाल पाथरक मुर्ति प्रांगनमे देखि पडैछ ह्वेनसांगक । सियानवासी हिनका अपन गौरव मानैत छथि ।

अभ्फुका लेल मोन भरि गेल छल । खाना हम सभ विचेमे खा चुकल रही तएँ बेसी चिन्ता नहि रहए । तखन हम सभ सोचने रही जँ समय बचिगेल तँ कोनो सोनीक बिक्री कक्षमे पैसल जाए । आ से भेल । दू भाषिया मिण्च्याउ कॉफी पिऔलनि आ लगेमे रहल डिपार्टमेन्टल स्टोरमे लऽ गेलाह । एकसँ एक सामान, मुदा महग । खासाबला सामान देखि क चिनियाँ उत्पादनक जे चित्र बनल रहए ओ एतुक्का सामानक भाओ देखि छिन्न

भिन्न भऽ गेल । माल एक नम्बर मुदा दाम सेहो एक नम्बर गारण्टीसाथ दू गोट सहयात्री मित्र २७०० युयानमे । दू गोट भिडियो कैमरा लेलनि । हमहुँ बड़ खोजबीन कएलापर एकटा पैड किनल लगभग १४०० युयानमे । १० ईंचक स्क्रीन आ आन बहुतो खुबी । काठमाण्डूमे भेटब दुर्लभ आ ओहन भेटबो करए तँ ३०-३५ हजारक विच । ओत्त त सस्ते भेटल, गारण्टीक सँग ।

साँझ ६.३० बजे धरि हमरा सभकें सपर (साँझक खाना) खएबाक समय निर्धारित छल । तेहने भव्य रेस्टुरेन्टमे स्वइच्छा भोजन भेलैक आ रातिमे सियान प्रांतक प्रतिनिधिमूलक सांस्कृतिक कार्यक्रम देखबाक अवसर । एहिमे टान साम्राज्यक कथा, उपकथा, सांस्कृतिक परम्परा सभ नृत्य द्वारा प्रस्तुत कएल जाइत देखि कऽ दंग रहि गेलहुँ । सभसँ गजब त लागल तखन जखन नर्तकी सभक मंचपर अद्भूत इन्द्रधनुषी छटामे होइत नृत्यक विच हौलक बीच बाटसँ सम्राट आ साम्राज्ञीक वेशमे कलाकार लोकनि मंच दिश बढ़ैत छथि । सौंसे हौल थपड़ीक संग सम्मानमे उठि कऽ ठाढ़ भऽ जाइछ । हमहुँ सभ ठाढ़ भऽ गेलहुँ । सम्राट मंचपर जा किछु काल गद्दीपर बैसैत छथि । कथानक नृत्य चलैत रहैछ । एक समय अबैछ सम्राट उठैत छथि आ साम्रज्ञीक संग जन सामान्यक ओहि उत्सवमे नाच लगैत छथि । एक बेर फेर देशी-विदेशी पर्यटकसँ भरल हौल थपड़ीसँ गुंजायमान भऽ जाइत छैक ।

ई छैक निचियाँ संस्कृतिक विशेषता । हम सभ अपना समृद्ध सांस्कृतिक विरासतकें वीसरि विदेशी प्रभावे रमन-

चमनमे रमल जा रहल छी । ओहि नृत्य-गीत कार्यक्रमक नामे रहैक -"द तांग डाइनेस्टी म्यूजिक एण्ड डान्स ।" टिकट दर रहैक ३८० युयान अर्थात् तीरपन सय बीस टका । संस्कृतिक सुन्दर दोहन । भोरे ८.३० बजे हमरा सभकें होटल छोड़ पड़त । कुनमिंग जएबाक छैक । आब सभ गोटे होटल दिश बढ़ैत छी । होटलमे पहुँचि रात्रि विश्रामक जोगारमे लागि जाइत छी ।

आसीन १२ गते अर्थात् अक्टुबर २८ ता. शुक्र दिन । आइ एकटा महत्वपूर्ण सम्पदाक भ्रमण कार्यक्रम अछि । सियान राजघराना (साम्राज्य)क चारूकातसँ सुरक्षा घेरा लेल बनाओल गेल विशाल देवाल ।

आठ बजे जलखई होइत छैक । खा-पीकऽ हम सभ देवाल देखबा लेल जाइत छी । हमरा सभक संगमे रहैत अछि महिला गाइड मिस मोनिका । चंचल, सुभग आ बातुनी ।

नगर द्वार दिश लऽ जाइत अछि गाइड । उपर चढ़ैत छी । आह, मजा आबि गेल । तीनटा बस मजासँ एक्के सँग दौगि सकैत अछि । औजी, चिनियाँ लोक एतेक जीवटगर कोना होइत छल । देखबामे छोटछीन रहैत अछि, मुदा निर्माण । केहन-केहनके छक्का छुटि सकैत छैक । हम सभ लगभग एक घंटा धरि मटर गश्ती करैत छी । निचाँ देखलापर फुटपाथपर दोकान छनने लोक देखि पड़ैछ । तीमन तरकारीक खुदरा बजार ओहिना फूटपाथक काते-कात । पछिम दिश पुरना घर

सभ सामान्य । अर्थात् गरिबी आ समृद्धि विचक अन्तर द्वन्द्व । एखन धरि समृद्ध चीन देखने छलहुँ, आब एकर दोसरो रूपक दर्शन होइत अछि । हम सभ एहि अद्‌भुत देवाल मादे जान चाहैत छी । जिज्ञासा हएब जरूरी ।

सियानक ई देवाल विश्वक पैघ प्राचीन सैनिक सुरक्षा घेरा थिक । ई देवाल पुरना तांग राज्यघरानाक समय (६२८-१०७ई.पू.) मे बनल रहैक । एकरा विस्तार कएलक मींग राजघरानाक पहिल सम्राट जूयानझान (Jhuyuanzang M 1368-1644) । देवाल जखन पूर्ण भेल तँ एकर खड़ाई १२ मिटर (८० फिट), चौड़ाई १२-१४ मिटर (४०-४६ फीट) आ निचां जड़िमे १५-१८ मिटर (५०-६० फीट) रहैक । ई १३.७ कि.मि. (८.५ माइल) लम्बाईक अछि जकरा चारूकात गहिंर खाधि छैक । १७ गोट पोस्ट छैक जे दुश्मनकें उपर चढ़बासँ रोकबाक हेतु छैक । एकर चारू दिश चारिटा पैघ-पैघ द्वार छैक ।

उपर देवाल घुमबाक हेतु साइकलक व्यवस्था छैक जे भाड़ापर भेटैत छैक । दोसर बैटरीसँ चल बला कार छैक । डेढ़-दू घंटामे साइकलसँ पुरा देवाल घूमल जा सकैत छलै त कारसँ प्रायः बीस-तीस मिनटमे । ८० युयानमे एक चक्कर कारसँ लगाओल जा सकैछ ।

वास्तवमे हमरा सभकें एयरपोर्ट जएबाक रहैत अछि तएँ समयकेँ ध्यानमे राखिए कऽ निर्णय करब उचित बुझैत छी । समय भेल जा रहल छैक । देवालसँ विदा भऽ जाइत छी ।

सी जेड ६२६९ क उड़ानसँ हम सभ १२.५क फ्लाइटसँ कुनमिंगक हेतु उड़ैत छी । २.५ बजे कुनमिंगक धरतीपर दोबारा उतरब । चाइना एयरक विमानक गति आ व्यवस्थापन सुन्दर होइछ । खानपीनपर कनेक ध्यान देब' पड़त नहि त अनर्थ भऽ जाएत । जे छुइबो ने करब से भोज्य पदार्थमे सामेल देखि सकैत छी । अभ्फूका भोजन हवाइए जहाजमे निर्धारित अछि । अबैत अछि ओ से एहन अबैत अछि जे टमाटर खा कऽ रहए पड़ैत अछि । आब घरमुहा भेल जा रहल छी । एक त इच्छित बस्तु नहि कीनि सकबाक पीड़ा रहैत अछि, दोसर कुनमिंगमे समय भेटत से आशा दिआओल जाइछ । मनेमन गुड़चाउर फकैत हम हवाई जहाजमे साथीक सभक संग मन भुला रहल छी ।



प्रसंग - दू/चित्रावली



सियानकें नगर द्वार पर लेखक ।



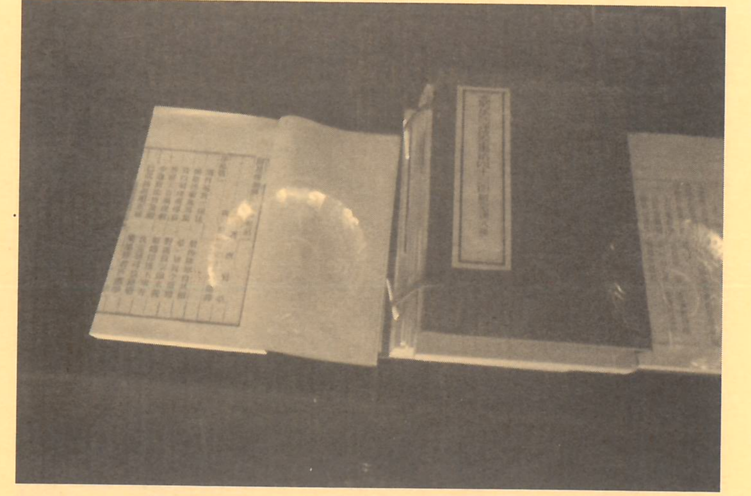
नगरद्वार निचां तरकारीके खुदरा पसल ।



नगरद्वार उपर निर्मित आवास गृह।



सियानमे सांस्कृतिक कार्यक्रमक झलक।



ह्वेनसाङ द्वारा संकलन कएलगेल बौद्ध ग्रन्थसभ।



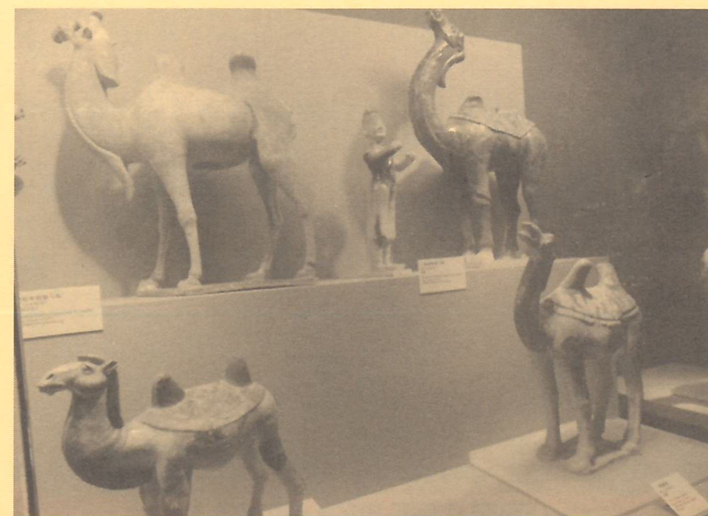
ह्वेनसाङक मूर्तिक कातमे लेखक सहित अन्य सदस्य।



नगरद्वार उपर निर्मित सडक



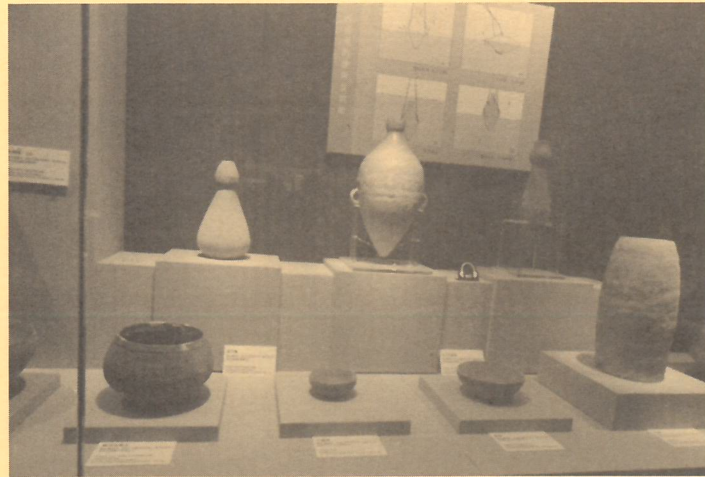
ह्वेनसाङ आवासक बाहिरी दृश्य।



तांग सम्राटकालीन कलात्मक उंट (६१८-९०७)।



ताही कालक एकटा कलात्मक उंट।



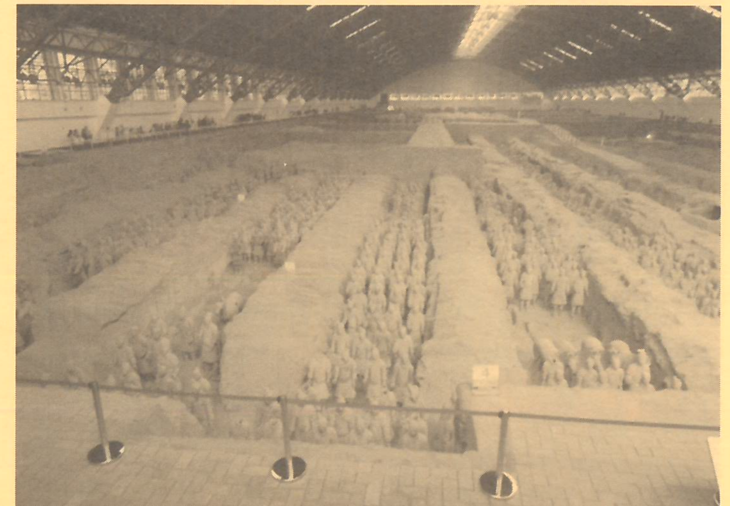
ईसापूर्व कालक माटिक वर्तन सभ।



झियान संग्रहालय अगाडि लेखक।



टेराकोटा म्यूजियममे राखल पीत्तरिक रथ।

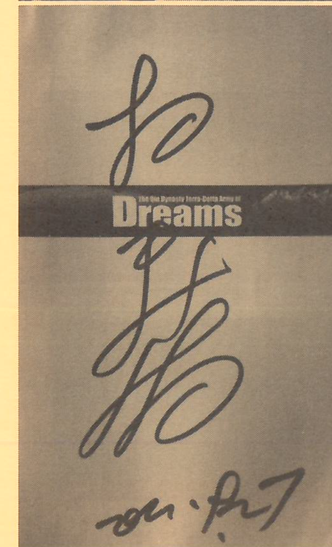


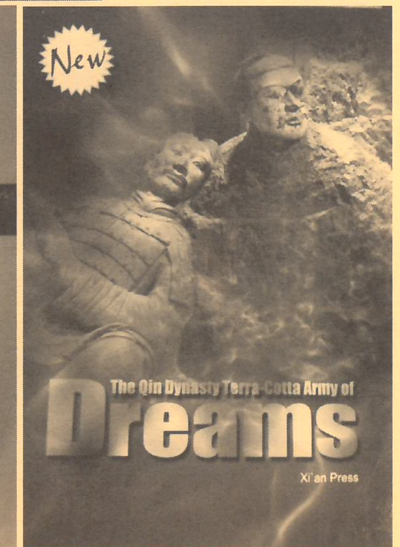
टेराकोटा म्यूजियमक भव्य दृश्य।


सियान होटलक लाउन्जमे लेखक ।


आतिथ्य संस्थाक संग सामूहिक तसवीर ।


चौक पर
ह्वेनसाङक
विशाल मूर्ति ।





टेराकोटाक पहिल उत्खननकर्ताक हस्ताक्षर युक्त पुस्तक ।

प्रसंग : ३

कुनमिंग



"पाथरक जंगल"मे टहलब कतेक आनंददायी भऽ सकैछ

सियानसं कुनमिंग माने घरमुहाँ । काठमाण्डू घुमबाक अन्तिम पड़ाव । २३ सितम्बर २०१२ सं प्रारंभ भेल हमरा सभक चीन यात्राक ई छठम दिन थिक । आ हम सभ चायना एयरक ०५ ६२६९ नं.क उड़ानसं कुनमिंग जा रहल छी । आइ २८ सितम्बर अछि । सियानक नगर देवाल देखैत-देखैत समय कनेक बेसीए भऽ गेल रहैक तएँ जखन हम सभ एयरपोर्ट पहुँचलहुँ तं जहाजमे हमरा सभकें बजाओल जा चुकल छल । हम सभ जल्दी-जल्दी अपन-अपन जान-माल सम्हारैत जहाजमे चढ़लहुँ । चलु पहुँचलहुँ त !

मुदा ससरैए नहि । तखन परिचायिका कारण बतबैत अछि - एयरपोर्टपर ट्राफिक जाम भेने किछु देरी हएत । काठमाण्डू मोन पड़ि गेल । ट्राफिकके नामपर अकासेमे कएक मिनट धरि उड़ैत रहबापर बाध्य कएल जाइछ जहाज सबकें । कहियोकाल त घुमाकऽ दिल्ली, अथवा आने ठाम सेहो पठा देल जाइछ । मुदा चीनमे त से वात नहि हएबाक चाही । सभ एयरलाइन्सके फूट-फूट ग्राउण्ड छैक । तएँ एहन बाधा कम्मे अबैत छैक ।

ठीक पचीस मिनट रूकलाक बाद जहाज ससर' लागल अछि । एकटा आर बात ओत्त देखलहुँ । जहाजमे कम्मे यात्री

सभ छल तएँ सन्तुलन मिलएबाक हेतु यात्रीकें आगां पाछा कएल गेलै । बुझाएल कुनमिंग रूट ओतेक लोकप्रिय नहि हएतैक । ओना इहो यात्रा दू घंटाक छल ।

जहाज एकघंटासं उपर उड़ल हएत कि झटका मार' लगलैक । काकपीटसं कहल जा रहल छलैक - जहाज हिलत तएँ कोनो यात्री अपन सीटसं नहि उठथि । मुदा से कतहु हुअए । किछु मित्र हिलैत-डोलैत 'फ्रेशरूम'सं भइए अबैत छलाह । सभ पर आदेश चलियो ने सकैत छैक ने । आकाश पर बादल छलै आ वर्षा सेहो भऽ रहल छलै । तएँ करिया मेघकें कटैत काल जहाजक गतिमे थरथराहट आएब स्वभाविक । आ तकरा संगे देहो थरथरा जाइत अछि । अनका बसक यात्रामे एहन अनुभव होएब अस्वभाविक नहि !

हम सभ २.३० बजे कुनमिंगक एयरपोर्टपर उतरैत छी । ओह विशाल एयरपोर्ट । सभ जहाजक फूट-फूट ग्राउण्ड । उपरसं सभ औपचारिकता पुरा करैत जखन बाहर अबैत छी तं हमरा सभकें लेबाक हेतु आतिथ्य संस्थाक प्रतिनिधि आबि गेल रहैत छथि । बाहर स्थानीय गाइड हमरा सभक हेतु पर्यटक मिनी बस लऽ कऽ ठाढ़ छल । हमरा सभकें इच्छा रहए जे होटल जाइ आ कपड़ा बदलि कऽ कार्यक्रम स्थलपर जाइ, मुदा आयोजक सभके आग्रह रहैक जे एयरपोर्टसं सोझे कार्यक्रम स्थलेपर लऽ गेल जाए । से सामान सभ दोसर गाडीसं होटल पहुँचाओल गेलै आ हम सभ गाइडक गाडीसं विदा भेलहुँ । मौशम एत्तहु खराबे रहए । मेघ लागल रहै, पानि पड़बाक लक्षण

साफ देखा रहल छलैक । जे सियानमे पहिरने रही अर्थात् सामान्य तापक कपड़ा ताहीमे ओत्त जाए पड़ल तकर दुखो रहए ।

स्थानीय गाइड २५, ३० वर्षक छौड़ा रहए । अपन परिचय देलाक बाद ओ कुनमिंगके बारेमे बात करब शुरू कऽ देने रहए । सभ गोटे बड़ मनोयोगसं ओकर बात त सुनिते रही बाहर कुनमिंग शहरक उन्नतिक पहिचानपर सेहो नजरि रहए । उच्च-उच्च अट्टालिका, सफा-पैघ सड़क आ उएह हरितिमाक एकछत्र राज्य ।

गाइडक बकबकी जारी छल - चीनक जनसंख्या बड़ तेजीसं बढ़ि रहल अछि । जतेक जनसंख्या बढ़ैत अछि बेरोजगारी सेहो तहिना बढ़ैत अछि । एहि ठाम दम्पत्ती सभ बेटा मात्र जनमाब' चाहैत अछि । ताहिसं लड़की सभक संख्या अत्यन्त थोड़ छैक । एहु कारणसं युवा सभकें विवाह करबाक समस्या भऽ गेल छैक ।

अपना बारेमे कहलक-हमर उमेर ३७ वर्ष भऽ गेल अछि, विवाह नहि कऽ पाबि रहल छी । लगैए विवाह करबाक हेतु ताइवान, वियतनाम जाए पड़ि सकैत अछि । एकरा लेल पासपोर्ट-भीसाक बात सेहो करैत अछि । मुदा पासपोर्टक लेल भिजिंग जाए पड़ैछ - से कनेक समस्या छैक ।

टोलीक सदस्य सभ ओकर बात सं खूब मनोरंजन लऽ रहल होइछ । कोना कऽ शहर आबि गेल आ कार्यक्रम स्थल, बुझबामे नहि आएल । एयरपोर्टपर विष्णुविभूजीक बेग दू बेर हरा

गेल रहैक मुदा दुनू बेर भेटलैक । बेगमे आबश्यक सामानक संग हुनक औषधि छलनि जकरा खाइत रहब हुनका लेल जरूरी रहनि । भेटलापर सभके चैन भेटल रहैक । तएँ कुनमिंगक एहि सफरमे सभ खूब हृदय खोलिकऽ आनन्द उठौलक ।

हम सभ कार्यक्रम स्थलपर पहुँचलहुँ त पता लागल अध्यक्ष महोदय नहि आबि सकल छथि । बगलेमे सियान युनभर्सिटी रहए । विशाल आ आकर्षक । हम सभ ओम्हरे बढ़ैत छी । मेघ लगने वातावरणमे ठंढ़ई बढ़ि रहल छलैक । युनभर्सिटी बन्द भऽ गेल रहैक । हम सभ ओकर सीढ़ीपर ठाढ़ भऽ सामूहिक तसवीर खिचएलहुँ । हमरा सभक दू भाषिया ई नेक काम कएलक ।

किछुकाल ओत्तहि गप सभ भेल तखने बजाहट आबि गेल । अध्यक्ष महोदय आबि गेल छलाह । ई सिफलैकक स्थानीय कार्यालय रहैक । अपन भवन, अपन सरंजाम । चीनमे भाषा, साहित्य, कलाक हेतु एहि स्तर पर काज होइत देखि प्रशन्नता हएब स्वभाविक । हमरा सभक स्वागतक हेतु विशेष रूपें सजल कमरामे बैसाओल गेल । कलाकार, साहित्यकार, संगीतकार आदिक उपस्थितिमे दुनू देशक प्रतिनिधि मंडलक नेताक मन्तव्य शुरू भेल । धन्यवाद ज्ञापन भेल । अपना-अपना देशक कला संस्कृतिक बात राखल गेल । एक दोसराक विच एहि तरहक सांस्कृतिक आदान-प्रदानक कार्यक्रमसं सम्बन्ध मात्र मजबूत नहि हएत, सिखबाक, बूझबाक अवसर भेटतैक ई बात दुनू प्रमुख सभ महशूस कएलनि । सभास्थल पर फलफूलक प्रशस्त ब्यवस्था रहैक । तकरावाद उपहारक आदान-प्रदान भेलैक । कुनमिंगक आतिथ्य संस्थाक

दिशसं देल गेल उपहारमे स्थानीय जड़िबूटीसं उत्पादित चाहक सुन्दर पैकेट प्रदान कएल गेलै । कहल गेल रहै ओ चाह मधुमेह आ उच्च रक्तचापमे अत्यन्त लाभदायक होइत छैक । आ एकर कार्यक्षमता तीस, चालिस वर्षधरि रहैत छैक ।

उपहार आदान-प्रदानक वाद सामूहिक तस्वीर खिंचएबाक कार्यक्रम छल । कएक पोज खिचाओल गेल । तकराबाद हमरा सभकें दोसर कोठरीमे रात्री भोजक हेतु लऽ जाएल गेल । रात्री भोजक जे धुमगज्जरि खान-पानमे होइत छैक सभ भेलैक । मित्रबर वुंदजीक गजल सुनाओल गेल । खानसं पूर्व आएल 'पान'क बड़ मनोयोगसं मित्र लोकनि आनन्द उठौलाह । हम चारि गोटे हाथ बारने हुनका सभक हंसीमे साथ दैत रहलियनि । मधुपान आ हमरा सभकें जूसपानमे कोनो तात्विक अन्तर नहि बुझाएल रहे । हं, शुरूमे सभक आगां दू-दू गोट गिलास (जाम) राखल गेल रहै आ ताहिमे ढारलो गेलै । मुदा जे नहि पिबैत रहए तकरा लेल जूसक व्यवस्था भेलैक आ तखन भेलै चीयर्स ! जय हो । मस्ती तखन शुरू भेलै । बेसी देरी भेलासं हमरा किछु वोरियत होब लागल छल । मुदासंग देव बाध्यता छलैक । हमरा असुविधाकें असहयोग बूझल गेल आ ई बात हमर टोली नेता वादमे बजबो कएलथि, जकरा हम प्रतिवाद कएने रहियनि । जे जे वस्तु नहि खाइत हो त तकर आन व्यवस्था करबाक अभिभारा सेहो टोली प्रमुखकेहोइत छैक । ओ नहि रहैक तएँ हमरा दुख भेल । प्रायः आन तीनू मित्रकें भेल छल हएतनि मुदा ओ सभ पीबि गेलाह, हमरा नहि रहल भेल ।

जेना तेना भोजन कऽ बहरएलहुँ । एत्तहि फनिगाके झोर (सूप) देल गेल छल, सुरक'सं पहिने देखार भऽ गेल । हम ओकरा छोड़लहुँ ।स्वाद आ शक्ति दुनू ओहिसं भेटैत छैक कहांदन । चीनमे भोजनसं पहिने झोर आ जड़ीबुटी बला चाह पीवा लेल देल जाइत छैक । कहबाक जरूरति नहि स्वास्थ्यप्रति सचेत रहैत अछि चिनियां सभ ।

हम सभ खाना खएलहुँ आ आतिथ्य संस्थाक पदाधिकारी लोकनिसं विदा लैत फेर उएह गाडीमे होटल दिश बढ़लहुँ । हमरा सभकें टेलकम इन्टरनेशनल होटलमे लऽ जाएल गेल । हमर कमरा छल १६०९ नं. के । वास्तवमे लिफ्टसं जाए पडैऽत छैक - सोझे अकासे दिश । राति ८ बजे कमरामे पहुँचि गेल छलहुँ । आने दिन जकां सुतबासं पूर्वक कार्यक्रम सम्पन्न कएलहुँ । तकरा बाद सोफापर बैसि कनेक टी.भी. खोललहुँ । ई बूझिकऽ जे चिनियां भाषामे कार्यक्रम हएतैक - बुझबैक की । मुदा ओहुना मनोरंजनक दृष्टिसं खोललहुँ । आ ध्यान कोनो दोसरो दिश छल कि नेपालीमे बजैत सुनलहुँ त चौंकि कऽ टी.भी. दिश गौरसं देखबाक उपक्रम कएलहुँ । वास्तवमे नेपालमे प्लेन दुर्घटनाक समाचार छल । जहाजमे आगि लागि गेल छलैक । सएह दृश्य देखबैत काल ककरो सम्वाद नेपालीमे बजैत देखाओल गेल छल । चिन्ता बढ़ल-कत्त की भेलै । जहाजक दुर्घटना— परेशानी आ चिन्ता दुनू । फेर मन मारिकऽ ओछान पर पड़ि रहलहुँ ।

भोरे उठलहुँ । नित्यकर्मसं निवृत भऽ जलखई बला कक्षमे गेलहुँ । सभ सहयात्री लोकनि सहटि कऽ आबि रहल छलाह ।

रतुका विमान दुर्घटना हमरा सभक विचमे चर्चाक विषय बनल छल । जलपान भेल आ तखन आगांक कार्यक्रमक हेतु गाइडक प्रतिक्षा होब' लागल । आइ जलखईक बाद स्टोन फरेस्ट देख जएबाक कार्यक्रम छैक । तकरा बाद दिनका खाना आ तकरा बाद युयानक प्रोभिन्सियल म्यूजिम देखबाक छैक । तखन सपर (रात्रीक खाना) आ १० बजे रातिमे एयरपोर्ट । आइ राति १२.५५ अर्थात् दोसरदिन भेने ढाका जएबाक छै । ओत्तसं भिनसर काठमाण्डूक प्लेन छैक ।

गाइड गाड़ी लऽ कऽ अबैत अछि । हम सभ अपन कैमरा, वेग सम्हारैत गाडीमे बैसैत छी । गाडीमे बैसल गाइड अपन बक-बक शुरू कऽ दैत अछि । मुदा ओकर बक-बकमे आनन्द छैक, सूचना छैक । ओ स्टोन फरेस्टक सम्बन्धमे बतब' लगैत अछि ।

हम सभ स्टोन फरेस्ट' (पाथरक जंगल) दिश जा रहल छी जे कुनमिंग शहरसं १२० कि.मि. दक्षिण-पूर्वमे पड़ैत अछि । ओत जएबामे बससं सामान्यतः अढ़ाई तीन घंटा लगैत छैक । मुदा हमरा सभके प्रायः दू घंटा लागल रहए । ई लुनान यी नेशनलिटी अटोनोमस कंट्रीमे पड़ैत अछि आ ४०० स्क्वायर कि.मि.क क्षेत्रमे पसरल अछि । यी स्टोन फरेस्ट मींग डायनेस्टी (१३६८-१६-४४ई.)सं जानल जाइत अछि । आ जखन एकरा लोक देखलक त ई संसारक पहिल आश्चर्य कहाओल गेल रहए ।

पैघ आ छोट दू तरहक जंगल छैक जकरा पैदल घुमबामे कमसकम दूघंटाक समय लगबे करैछ । हं, एहिसं

प्राकृतिक रूपें ठाढ़ पैघ-पैघ नमछर श्वेत-श्याम पहाड़क श्रृंखलाके भितर पैसि छूबाक, विचरण करबाक अपन फुट आनन्द भेटैत छैक । भितर 'जंगल'मे सुन्दर पिकनिक स्पॉट सभ बनल छैक । रमणीय स्थल सभ पर दर्शककें बैसबाक व्यवस्था कएल गेल छैक ।

युयान राज्यकें सभसं महत्वपूर्ण दर्शनीयमे स्टोन फरेस्ट पड़ैत अछि । चीनक राजधानीमे एक वृद्धसं ओहिना वातचीतक क्रममे हम सभ अपन भ्रमणक उद्देश्य कहैत कुनमिंगमे देखबा योग्य आर की सभ अछि पुछने रहिऐक त ओ बिना किछु सोचने कहने रहए - जं अहां बिना स्टोन फरेस्टकें देखने कुनमिंग घूमिकऽ चलि गेलहुँ त बुझु जे अहां मात्र समयकें बर्बाद कएलहुँ ।

आ आइ जखन पाथरक महाजंगलमे घुमि रहल छी तं लगैत अछि ओ बुढ ठीके कहने छलाह । गाछ-विरीछकें जंगल त देखल, सूनल छल ई पाथरकें जंगल । वाह रे प्रकृति ! भितरमे गेलापर पानिक झरना सभ सेहो छैक । ताल सभ सेहो छैक । मुदा तकरा लेल फैलसं पैदल घुम पड़त । हम सभ नेपाली, पर्यटनकें सुख-सुविधा आ टाइमपास बुझैत छी । तएँ ने दू घंटा पैदल घुमबासं नीक बैटरी कारमे सौंसे जंगल काते-कात घुमिकऽ मोनकें शांत कऽ लेने रही । ओत्तहि देखिऐक विदेशी पर्यटक सभ गाइड सभक संग हेंजक हेंज जंगलमे पैदले घूमि रहल छल आ मगन छल । किछु नव पएबाक खुशी छलैक ओकरा सभक अनुहार पर ।

आ हम सभ बैटरीबला गाडी (ट्रॉली जकां) पर चढ़ल मस्तीसं देखैत, कैमरामे कैद करैत घुमि रहल छी । तैयो जेदृश्य सभ देखैत छी ओ ठीके अद्भूत छैक । कोना जमीनसं उपर उठल गाछ जकां पाथर आ से एक पतिआनसं, आह देखिते बनैत छैक । हं, हमरा सभक गाइड एक ठाम ट्रॉली रोकबैत अछि आ हमरा सभकें उतारिकऽ एकटा दर्शनीय स्थलपर लऽ जाइत अछि । सुन्दर पाथरक करिगरी कएल धनगर श्रृंखला... । विचमे घासक मैदान । हम सभ गाइडक पाछां-पाछां ओहि मनोरम जंगलमे घुमैत छी । मुश्किलसं आधा घंटा धरि हम सभ ओहि पाथरक बीच गुजारमे हएब, ठीके आनन्द लागल छल । नव ठाम, नव वस्तुक संग साक्षात्कारक अनुभूति ।

कहल जाइछ लगभग २७० मिलियन वर्ष पूर्वमे एत्त पानि आ पाथरक भेल प्राकृतिक उठापटकमे एहि जंगलक निर्माण भेल छल । ई क्षेत्र जनजाति सभक आवास क्षेत्र पड़ैत अछि । 'सानी' जनजाति सभक मुख्य बास स्थलक रूपमे जानल जाइत एहि क्षेत्रमे एकरा सभक "टॉर्च फेस्टिबल" खूब भव्य रूपें मनाओल जाइत छैक - राष्ट्रिय स्तरपर ।

आब हमरा सभक गाडी अपन प्रस्थान स्थानपर आबि रूकि जाइत अछि । हम सभ उतरैत छी ।अपन गाडीकें ड्राइभरकें खबर कएल जाइछ । ओ तुरंत आबि जाइत अछि । हम सभ अपन गाडीपर चढ़ैत छी आ विश्वक आश्चर्य एहि अद्भूत जंगल सम्बन्धमे चर्चा-परिचर्चा कर' लगैत छी । ओना भुखो लागल जाइत छैक । से खानाक जोगार हमरा सभक दू भाषिया मि.

च्याउक जिम्मा होइत छैक । मौशममे फेर कनेक बदली आबि गेल छैक ।

दू भाषिया मि. च्याउ बाटेमे एकटा भव्य होटल, जे हमरा सभक ओहि ठाम ढाबाक रूपमे सडक कातमे होइत अछि, ताहिमे लऽ जाइत अछि । किछु देरी भऽ गेल छैक तएँ पहिने खानाक अवस्था की छैक से पुछल जाइत अछि । खाना छै से खबर अबिते सभकेओ भव्य सजाओल विशाल हॉलमे प्रवेश करैत छी जाहिमे टेबुल सभ भरल । ओ सब प्रायः तेहने स्टोन फरेस्टसं घूमल सभ भऽ सकैछ । ओत्त स्थानीय लोक सेहो जाएल करैत अछि ।

हमरा सभकें एककातमे टेबुल भेटैत अछि आ सभ गोटे बैसि इच्छा अनुसारक अर्डर दैत खाना अएबाक प्रतिक्षा कर' लगैत छी । खाना अबैत अछि । उएह उसनल सागपात, कटोरामे भात, सिझाओल विन मशालाक बढ़का सद्यः माछ आ आन आर आर बहुत किछु । सभ गोटे खाना खा बहराइत छी । पानि जे टिपीर-टिपीर पड़ लागल छल से एखन रूकि गेल अछि । आब हमरा सभक विच एकटा बहस शुरू भऽ जाइत अछि - की प्रोभिसिन्यल म्यूजियम देखल जाए अथवा तकरा स्थानपर किछु किनमेल कऽ लेल जाए । शहर जाइत-जाइत तीन टपि जएतै । तखन बजार जएबाक अवसर कत्त भेटतै । रातिमे कत्त बौआए जाएल जाए ।

एकटा बाधा रहैक । कार्यक्रममे जे पूर्व निर्धारित व्यवस्था रहैक तकरा फेरब दू भाषियाके लेल सेहो कठिन छलैक । तखन

टोली प्रमुख उपकुलपतिजी टोली सदस्य सभक भावनाकें देखैत मि. च्याउसं आग्रह कएलखिन्ह तखन ओ तैयार भऽ गेल । सभक अनुहारपर खुशी दौड़ि गेल रहैक । तखन गाइड पुछलकै की सभ लेब ? जाहिसं ओकरा लऽ जाएमे सुविधा हएतैक । सभ अपन-अपन बात कहलकै । ओ सभसं पहिने लऽ गेल सिल्क दोकानमे । मकानक निचांमे रहैक विशाल पसल । कहबाक जरूरति नहि कुनमिंगक इतिहास २४०० वर्ष पुरान अछि । एत्त बारहोमास फूल फुलाइल रहैछ आ तएँ एकरा निरन्तर जारी रहबला वसन्तक नगर कहल जाइछ । कुनमिंग चाइना वाटे जाइत सिल्करोडक प्रमुख द्वार छल जे तिब्बत, सिचुआन आ भारत धरि व्यापारिक बाट उपलब्ध करबैत छलैक । आइयो ई राजनीतिक, आर्थिक आ सांस्कृतिक केन्द्रक रूपमे युनानक राजधानी अछि जे दक्षिण-पश्चिम चीनक एकटा प्रमुख पर्यटकीय केन्द्र सेहो मानल जाइत अछि ।

तएँ पहिने देखी सिल्कक अवस्था की छैक ! भितर गेलापर वस्तु सभ देखल । साड़ीक दाम पांच हजारसं उपरे आ सिल्कक हाफ सर्टकें ३००युयान अर्थात ४२ सय नेपाली । कोनो साथीकें हिम्मत नहि भेलैक ओत्त ठहरबाक । हम सभ बाहर अएलहुँ । मोतीक दोकानमे पैसल गेल । ओह, सितुआमे सं मोती नीकालि देखौलक दोकान मालिक । बड़ बातूनी । एना कऽ सम्मोहन कर' जनैछ जे किछु ने किछु लीही पड़ैत । आ से अपन-अपन सुविधा अनुसार लेबो कएलनि । पढ़ने रही - कुनमिंगमे दामक मोल मोलाई बड़ होइत छैक । से देखल । सेहो पाँच

हजार डेढ़ हजारमे भ्रड़ैत । धन हम सभ । नेपालक काठमाण्डू भृकुटी मण्डप देखल लोक सभ छलहुँ । मोल मोलाई मे बहादुर । ताहूमे मैडम डा. बैन्जु शर्मा त छक्का छोड़ा दैन ओकरो सभकें ।

आब हम सभ एकटा मॉलमे पहुँचलहुँ । ओत्त हरेक वस्तु भेटैत । हम सभ आब काठमाण्डू आ गामक हेतु गिफ्टक आइटम लेबाक सुरमे रही । हम किछु पेन, चकलेट आदि लेलहुँ । तकरा सभकें राखबाक लेल एकटा बेग सेहो जे हाथसं पकड़ि गुरकाओल जा सकए । लगेज सुविधाक हेतु आनो सहयात्री लोकनि अपना-अपना ढंगसं सामान सभ लेलनि ।

३० सितम्बर २०१२ । शॉपिंगके क्रममे एकटा महत्वपूर्ण अनुभवक बात कहब जरूरी बुझाइत अछि । चीनमे समान सभ सस्त भेटत से मनमे रहए । नेपालमे विकाइत चाइनिज समान वास्तवमे सस्त होइछ । एकरबाजार भारतमे सेहो नीक छैक । मुदा जखन कुनमिंगके एकटा बढ़का स्टोरमे गेलहुँ आ सामान सभक मोल पुछलिऐ त दिमाग सन्न रहि गेल । भारतीय बाजारमे भेटैत विदेशी सामान सन मंहग । हं, एकटा बात छै । चिनियां माल समानके नामपर तिब्बतके ल्हासा बाजार, खासा बाजारसं सामान सब अबैत छैक जे बेसीकाल नक्कल कएल नक्कली माल होइत छैक जकर गारण्टी नहि देल जाइत छैक । कखन खराब हएत कहब कठिन आ जं भेल तं फेकही पड़त । से एहि ठाम नहि देखल । दाममे एक भाओ, उचित समयक गारण्टी । अन्तर्राष्ट्रिय गारण्टी सेहो । स्वाइत समानक भाओ महंग छैक ।

हम एकटा आइपैड किनलहुँ । चीनक बनल ब्राण्डेड । १० ईंचक स्क्रीनबला ।नेपालमे तीस हजारसं उपर आ भेटबो दुर्लभ । से चिनिए माल । मित्र बुंद राणा एकटा घड़ी लेलनि । डा. बैंजुजी आर बहुत किछु । बजारो नमहर दामो नमहर । कुनमिंगमे सामान सस्त भेटत से भ्रम त टुटल मुदा विश्व बाजारमे अमेरिका, युरोपक अतिरिक्त एम्हर नहि आएल आइ फोन ५ (I Phone 5) चीनक बनल बजारमे छलैक । दाम ? सत्तरि हजार नेपाली । ५ हजार युयान-चिनियां टका । एत्त गारण्टी देवाकं कामसं विश्वसनीयता बढ़ैत छैक । मित्रवर राणाजी एकटा मोबाइल पत्निक हेतु किनलनि एक हजार युयानमे अर्थात् चौदह हजार नेपालीमे । हमरा त किछु आरो लेबाक रहए मुदा युयान लगभग समाप्त भऽ गेल छल । तएँ मन मारिकऽ रह' पड़ल रहए ।

दू भाषिया मि. च्याउ संकेत कएलनि जे सपरक समय भऽ गेल छैक । आठ बजैत छल हएतैक । तखन चलल जाए खानामे । फेर१० बजेक वाद एयरपोर्ट पहुँचबाक छलैक । ओ हमरा सभकें एहन होटलमे लऽ गेल जे काठक कारीगरीसं कोनो पुरना सांस्कृतिक घर लगैत छल । ओत्त प्रेमसं भोजन भेल । वास्तवमे घरमुहांक अपन आनन्द होइत छैक ।एहि बेरका जे जेहन खाना रहैक मन भरि खाएल गेल । हुं, बारल वस्तु एत्तहु नहि छलैक । हमर गाइड कुनमिंग एयरपोर्टसं शहर अबैत काल जे चिंता जतौने छल - चीनमे महिलाक कमि छैक से एतुक्का होटल सभमे गेलापर तकर अनुभूति त नहिए भेल । एत्तहु १४-२० वर्षक छौड़ी सभ चारू कात फुदकैत देखि पड़ल । वैरा त

अधिकांश लड़किए सभ भेटल हमरा सभकें । जे से ओम्हर मनकें लगएबाक पीड़ासं बचबालें घरक सौन्दर्यपर विचार-विमर्श करब उचित बुझाएल । फोटो खिंचल । समय ९ बजैत छल । एखनो एक घंटा समय छैक । की कएल जाए । ताबत डा. बेन्जूजीकें एही समयमे किछु आर किनबाक मोन भेलैक आ ओ गाइडक संगे बजार गेली फेर सामान लऽ आधा घंटामे आबि गेलीह । बड़ कष्टसं आर आधा घंटा कटलहुँ । १० बजैत हम सभ गाडी दिश बढ़लहुँ ।सभ गोटे प्रशन्न रही - चलु आब घरे जाएब । मुदा दुखो रहए ई तीन घंटाक उड़ानकें चौबिस घंटाक किए बनाओल गेलै । अर्थात् हमरा सभकें आइ कुनमिंगसं अपरान्ह ४-५ बजेक टिकट काठमाण्डूक रहैत तं सांझ सात आठ बजे काठमाण्डूमे रहितहुं । आब ढाका होइत काठमाण्डू अर्थात् काल्हि १० बजे धरि। ई फिरीशानी कहांदन कमदामक टिकट लेबाक कारणें भेल रहैक । जएनाए आ अएनाइके अपने टिकट कटब' पड़ैत छैक प्रतिष्ठानकें । से सस्त टिकटक चक्करमे हमरा सभकें गोल चक्करमे पाड़ि देल गेल रहए ।

जे से हम सभ एयरपोर्ट पहुँचलहुँ । मि.च्याउ आ गाइड सभ सामान सभकें व्यवस्थित कऽ एयरपोर्ट काउण्टरपर लऽ गेल । हमर नाममे किछु गल्ती रहैक भऽ गेल । आब चिन्ता भेल, जं रोकि दिअ त ! हम एसगरे कत्त रहब । एकटा कथा इहे गाइड सुनौने रहए । एकटा भारतीय पर्यटककें पासपोर्ट हेरा गेलै । ओ महिला छलीह । कोनो उपाय नहि लगलैक त ओ कुनमिंगमे एक सप्ताह बैसलीह । पासपोर्ट अएलैक, पाइ अएलैक

त गेलीह । कतौ हमरो ने से भऽ जाए । मुदा मि. च्याउ भितर जा कऽ बात मिलौलक आ हमर टिकट ओ के भेल । सामान सभ पठा देल गेलै । आब हमरा सभकें दू भाषिया मि. च्याउ आ गाइडसं विदा लेबाक समय रहए । उपकुलपति दुनूकें नेपाली टोपी उपहारमे देलखिन्ह । ओ सभ बड़ आवेशसं पहिरैत गेल । सभ मीलिकऽ फोटो खिंचौलनि । पुनः भेंटबाक गप-सप भेल । आ तखन हम सभ मि. च्याउसं भारी मनसं विदा लेलहुँ । हमरा सभक निर्धारित गेटसं भितर प्रवेशक व्यवस्था छल । क्रमशः गेलहुँ । पुरा जांच-पड़ताल होइत छैक । तखन लॅबीमे जहाजक प्रतिक्षामे बैसबाक हेतु सभ गोटे जाइत छी । विशाल लॅबी, मस्तीसं घुमबाक अवसर । १२.५५ बजेक जहाज । एखन बहुत समय छैक । कनेको अबूह नहि लगैत अछि । एत्तसं एक घंटा ५ मिनटक उड़ान । हम सभ बंगलादेशक समय अनुसार १ बजे पहुँचि जाएब । मुदा किछु देरी छैक । दश-बीस मिनट देरीए सही, पहुँचब । आब लगैए हमरा सभकें बजाओल जाएत । इलेक्ट्रोनिक सूचना पट्टपर जहाजक नवका समय निर्धारित कऽ देल गेल छैक आ से समयो आबि गेल छैक । तएँ हम सभ तैयार भऽ बैसैत छी भितर जएबा लेल ।

हमरा सभक एमयु ५७०८ नं.क उड़ानसं चाइना इस्टर्नक जहाज ढाका लऽ जएबा लेल तैयार भऽ गेल अछि । लिअ आबि गेल सूचना । हम सभ आब जहाज दिश बढ़ैत छी । आ कनेके कालमे जहाजमे बैसि रहैत छी । चलु राति भरि ढाका एयरपोर्टपर माछी मारब ! सात घंटाक ढाका एयरपोर्टपर बोरियत भरल

राति, थकित मन आ घर घूरबाक लिप्सा । बरू कही सब असंगति बात आ प्रक्रियाकें एहु दुआरे पीबि रहल छलहुँ जे घर घुरबाक प्रशन्नता छल ।

एयरपोर्टपर उतरलहुँ । रातिमे प्लेनसं निचां मात्र घनीभूत विजलीक समुद्र सभ देखि पड़ए अर्थात् बढ़का-बढ़का शहरक विजली बत्ती । नीक लगैक । एयरपोर्टपर सभ फर्मलिटी पुरा कएल आ विमान बंगला देशक ट्रान्जिट एरियाक बेंचपर जा बैसलहुँ । अपन मुख्य सामान बला बैग ट्रान्जिटमे छल । ओ सोझे आइ काठमाण्डूमे दर्शन देत । तएँ बैंचपर जे पहिरने छी ताही लऽ कऽ सन्तोष कर' पड़ल । हं, कुनमिंगमे किनल छोटका बेग संगमे रहए जाहिमे दवाई, दाढ़ी बनब'बला, मुंह घोअबला आ साबुन रहए जाहिसं भिनसरका नित्यकर्ममे कोनो बाधा नहि आएल ।

किछु गोटे निचांमे लम्बायमान भेलाह तं किछु गोटे बेंचेपर नीन्न मार' लगलाह । हम अपन नव किनल एप्पलक आइफोनसं इन्टरनेटक आनन्द लेब लगलहुँ । दू अढ़ाइ घंटा कोना कटि गेल पत्तो ने चलल ।

स्मरण भेल - जखन हम आइ फोन लऽ रहल छलहुँ तं दु भाषिया मि.चाउ बड़ माजाकी मूडमे कहने छल -'अहां सभक उमेरक लोककें आइ फोन किनैत देखि कऽ हम अचम्भित छी । हमर पिताजी हमर आइफोन चलब नहि चाहैत छथि । वास्तवमे ई नयां पीढ़िक हेतु थिक ।'

आइ हमरा संगे मि.च्याउ रहैत त कहितिऐक-प्रविधिमे युवाके मात्रे नहि, बूढ़-बूढ़ानुसके सेहो तेहने अधिकार आ पहुंच

हएबाक चाही । मात्र तकरा प्रयोग करबाक समय आ सीमाक बात अबैत छैक । युवा बेसीकाल आ बेसी सामग्री प्राप्त कऽ सकैछ, मुदा उमेरगर लोकक समय एकटा सिमित अवधिक लेल होइत छैक । बेसी समयमे ओ थाकि सकैत अछि, अबूह लागि सकैत छैक । ढ़ाका विमानस्थलमे प्रविधिक ज्ञान आ उपयोगसं हम समय मात्र नहि कटलहुँ, बहुत किछु जानबाक अवसर भेटल । नेपालक एक सप्ताहसंवंचित समाचार आइफोनक स्क्रीनपर देखि मोनमे हुलास भेल रहए । जकरा मित्र सभक विच शेयर करबामे फूट आनन्द भेटल छल ।

एक बेर सोधपुछारी भेल । एखन धरि काउण्टर खूजल नहि छल । तावत एयरपोर्ट परक ड्यूटी फ्री दोकानमे सामान किनबाक हेतु साथी सभ ससरलाह । ओत्त बंगलादेशक साडी सभ रहए - रंगविरंगक । सभ गोटे किनलनि । एक सय युयान अर्थात् चौदह सय रूपैआमे सूती साड़ी । तखन सोमरस सेहो छलैक ड्यूटी फ्री । सनेसक हेतु उत्तम वस्तु । ओहो लेल गेल । हम सभ घूमि-घामिकऽ जखन सीटपर किछु काल बैसलहुँ कि ६.३० बजे भिनसरमे काउण्टर खुजल । सभ गोटे ओमहरे गेलहुँ । पूछल गेल सीट कन्फर्म भऽ आएल अछि वा नहि । किछु कालक प्रयासक बाद हमरा सभकें बोर्डिंग पास दऽ देल गेल ।

आब हम सभ पास लऽ ट्रान्जिट लबीमे जएबा लेल चललहुँ । काठमाण्डू जाएबला प्रतिक्षालय । जांच-पास भेलाक बाद हम सभ वेटिंग बेंचपर बैसि गेलहुँ । कनेककालक बाद

हमरा लागल सदस्य सचिव सनत रेग्मीजीक झोड़ा हुनका आगांमे नहि छन्हि । हम पुछलियन्हि-की छोड़ि देलिऐ की ? ओ शुरूमे त नहि पतिअएलनि । जखन भान भेलनि तं गेलाह आ सुरक्षा जांच घरमे लावारिस पड़ल झोराकें उठा कऽ लओलनि । हम सामान विसर'मे माहिर छी से एहि बेर नम्बर एक रहलहुँ । हं, होटलमे लंग, सोपारी आ सुखमेलक पुड़िया धोखासं छुटि गेल सएह ।

हमरा सभकें बजाओल गेल । विमान पुराने छल । विमान बंगलादेशक बीजी ०७०१ नं.क उड़ानसं ढाकासं काठमाण्डू । एक घंटा दश मिनटक बाट । परिचारिका दिश तकलहुँ । आहिरे बा ! एहिमे पुरुष छथि । चलु हमरा की लेना देना अछि - पुरुष होइ कि युवती । २१ ई. नं.क सीट रहए बैसलहुँ । हं, एकटा ३०-३५ वर्षक परिचारिका सेहो काक पीटसं बहरएलीह अछि । नेपाली फिल्मक एकटा नायिका सेहो किछु अगाडी सीटपर बैसल छलीह । विमान कनेके काल आगां बढ़ल कि हमरा सभक आगां जलखईक पैकेट आबि गेल । हं, जलखई देखि लागल जे ठीके आब हम सभ भारतीय उपमहाद्वीपक क्षेत्रमे आबि गेल छी । एक बोतल पानि, एक बोतल सेभेनएप, ब्रेड आ एकटा सेव । चीनमे त होटल हो कि हवाई जहाज । पीअ'बला पानि त देखब दुर्लभ-पीबाक त बाते नहि । हं, जूस, आ वीयर भेटि सकैत छल ।

विमान ठीके शांत आ सुगम तरिकासं नेपाल दिश बढ़ि रहल अछि । लिअ पहाड़ी श्रृंखलासब देखार भऽ रहल अछि ।

लगैए आब हम सभ काठमाण्डू लग आबि गेल छी । ताबत परिचारिकाक स्वर उभरैत अछि - विमान बीस मिनटक बाद काठमाण्डू एयरपोर्टपर अवतरण करत । मनमे उल्लास भरि गेल । चलू आब त अपन ठाम अएलहुँ । विमान बीस मिनट भेलाक बादो अवतरणक कोनो सूचना नहि अएने चिन्ता बढ़ैत अछि । की भेलै ! तखने विमान होल्डिङ्गक सूचना देल जाइछ । देह सीहरि गेल । काठमाण्डू विमान स्थलपर ट्राफिक समस्याक कारणें एक-एक घंटा आकाशमे विमान उड़ैत हम देखने छी । किछु अन्तर्राष्ट्रीय विमानकें कलकत्ता, दिल्लीमे उतरैत सेहो पढ़ने छी । की हमरो सभके विमानक सएह हाल त नहि हएत । चीनमे ई होल्डिंग समस्या नहि देखलहुँ । सभ विमानकें अपन-अपन उड़न क्षेत्र रहैक । किए कोनो परेशानी । नेपालमे अबिते_ । से बेसी देर हमरा एहन दुःखद मनः स्थितिमे रह' नहि पड़ल । पुनः चारि पांच मिनटक बादे सूचना देल गेल - विमान काठमाण्डूक विमान स्थलपर उतरि रहल अछि । ओह ! जय-जय भऽ गेलै । चलू अएलहुँ अपन देश, अपन ठाम, अपन गाम ।

त्रिभुवन एयरपोर्टपर आबि सामान सबक प्रतिक्षा कर लगलहुँ आ जखन ओ आएल तं हमर बेगक ताला टुटल छल । चिन्ता भेल, तेजीसं भितर देखलहुँ सभचीज ठीक रहए । लागल धक्कम् धक्कामे ई टुटि गेल होएत । कुनमिंगसं ढाका आ ढाकासं काठमाण्डू । तखने सचिवजीक वेगक ताला सेहो टुटल रहनि । ओ किछु खोजलनि तत्काल नहि भेटलनि ।ओ नियमानुसार

शिकायत दर्ज करौलनि प्रायः। हम सभ क्रमशः बाहर आबि गेलहुँ। हमरा सभक गाडी आबि गेल छल। राम लल्हका मारुती भान लऽ कऽ ठाढ़ छल। सामान सभ धएलहुँ आ अपन डेरा मैतीदेवीक हेतु चलि पड़लहुँ।



प्रसंग - तीन/चित्रावली



पाथरक जंगल देखलाक बाद टहलैत साथी सभ।



परम्परागत काठक बनल सांस्कृतिक भोजनालय।



समृद्ध कुनमिंग बाजारक एकटा दृश्य।



विद्युत चालित हवागाडीपर लेखक संग आन सहयात्री।



चाहक पत्तीक उपहार ग्रहण करैत लेखक।



सियान युनिभर्सिटीक आगामे फोटो सेसन।



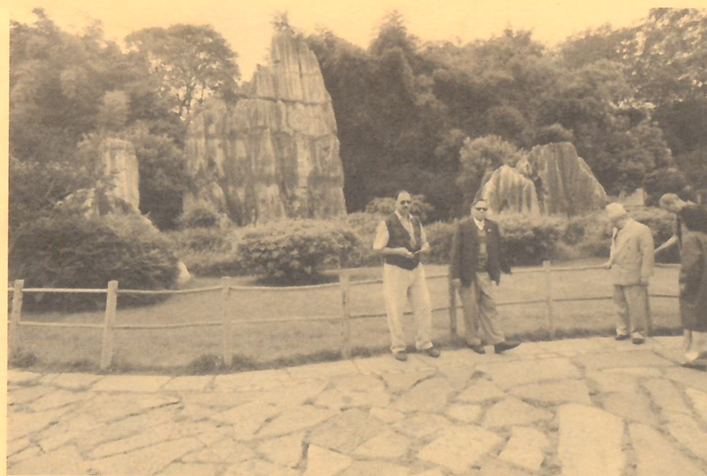
सुख एवं समृद्धिक नगर : कुनमिंग।



सियान एयरपोर्ट पर सामूहिक तसवीर।



पाथरक जंगलक एकटा मनोरम स्थल पर लेखक।



युनेस्को चिन्हक संग लेखक एवं सहयात्री लोकनि।



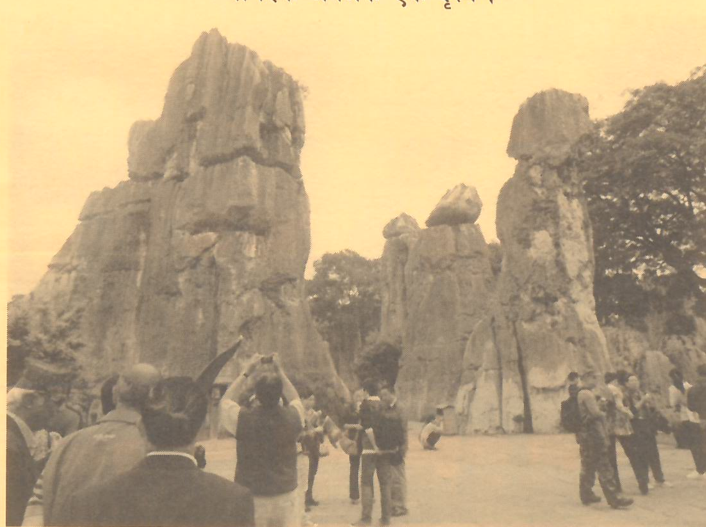
पाथरक जंगलक एकटा उत्कृष्ट दृश्य ।



भव्य आ आकर्षक पाथरक जंगल ।



पाथरक जंगलक एक दृश्य ।



पर्यटक सभसं भरल पाथरक जंगल ।



पाथरक जंगल आ प्रकृतिक कमाल ।



सियानक साहित्यकार सभक संग ।

राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'

जन्म : २००८ साल श्रावण, बधचौरा, जि. धनुषा ।

शिक्षा : एम.ए. (पीएचडी, मानद) ।

रचना : कथा, कविता, उपन्यास, नाटक, निवन्ध लगायत लगभग तीन दर्जन पुस्तक ।

सम्प्रति : सदस्यः प्राज्ञ परिषद्, नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठान

मैथिली साहित्यमे बहुविधाक रचनाकार प्राज्ञ राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' मैथिलीक अतिरिक्त नेपालीमे सेहो प्रशस्त रचना कएने छथि । कथा, कविता, उपन्यास, नाटक, निबन्ध आदि अनेक विधाक पुस्तक लेखक प्राज्ञ 'भ्रमर'क ई यात्रा संस्मरण "चीन जे हम देखल" नेपालीय मैथिली साहित्यमे यात्रा-संस्मरण विधाक अभावकें अवश्य पूर्ति करबामे सहायक हएत ताहिमे हम विश्वस्त छी ।

नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठानसं गेल चीन भ्रमणक प्रतिनिधि मंडलमे सदस्यक हैसियतसं प्राज्ञ 'भ्रमर' ओत जे किछु देखलनि, सुनलनि ताहि वस्तुस्थितिकें बड़ सजीव रोचक आ विशिष्ट शैलीमे प्रस्तुत कएलनि अछि जे चीनक उक्त तीनू क्षेत्रक सम्बन्धमे जिज्ञाशा आ उत्कंठा जगएबाक काज करत एहिमे दूमत नहि भए सकैछ ।

हम हुनक लेखनक निरन्तरताक कामना करैत छी ।

२०७०।९।१८

(बैरागी काइँला)
कुलपति
नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठान



